

NAME: _____ STD.: _____ SEC.: _____ ROLL NO.: _____ SUB.: _____

NAME:

STD.:

SEC.

ROLL NO.:

SUB.

STET-Aspirant-SATYAM

* मनो विज्ञान के संप्रदाय से हमारा अर्थ उन विचार धाराओं से है जो समय-2 पर मनो विज्ञान को प्रभावित करती रही हैं - हम ऐसी ही कुछ विचार धाराओं पर चर्चा करेंगे।

1 * संरचनावाद :- ① यह मनो विज्ञान का सबसे पुराना संप्रदाय है जिसकी उत्पत्ति जर्मनी से हुई।

② 1879 में जर्मनी के विल्हेम वुण्ट ने पहली प्रयोगशाला स्थापित करके चेतना को मनो विज्ञान का केंद्र बिंदु मानकर इसका अध्ययन किया।

③ वुण्ट के अनुसार चेतना हमारे हर अनुभव का माध्यम है तथा चेतना भी एक संरचना है जिसके तीन अंग हैं। - संवेदना, भाव, एवं उत्तिष्ठा

④ पहली प्रयोगशाला स्थापित करने वाले वुण्ट की प्रयोगात्मक मनो विज्ञान का तथा प्रयोगात्मक विधि का जनक भी माना जाता है।

⑤ व्यक्ति चेतना दिखाई नहीं देती है इसलिए वुण्ट की विधि को अंतः दर्शन विधि भी कहते हैं।

2 * प्रकार्यवाद (functionalism) :- [चेतना के कार्य]

① इस संप्रदाय के जनक विलियम जेम्स हैं जिन्होंने कैम्ब्रिज में मनो विज्ञान की इसरी प्रयोगशाला खोली।

② जेम्स मानते थे कि चेतना दिखायी नहीं देती है इसलिए संरचनावादियों द्वारा चेतना के अंगों को बताना निरर्थक है इसलिए उन्होंने चेतना की जगह चेतना के कार्यों पर जोर देने के लिए कहा और इसीलिए यह संप्रदाय प्रकार्यवादी कहलाया।

③ जेम्स की प्रसिद्ध पुस्तक द प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी को मनो विज्ञान की पहली प्रामाणिक पुस्तक माना जाता है और इसकी लोकप्रियता ने जेम्स को मनो विज्ञान का जनक बना दिया।

④ जेम्स ने पहली बार मनो विज्ञान में मूल प्रवृत्ति शब्द का प्रयोग किया।

3 * उद्देश्यवाद (Purposivism) :-

① 1904 के आसपास मनो विज्ञान में मैकडगल के नेतृत्व में उद्देश्यवाद का पन्थ हुआ जिससे हम होमिकवाद भी कहते हैं।

② Homatic शब्द पुनामी भाषा का है जिसका अर्थ है उपयोग या उद्देश्य अर्थात् हमारे प्रत्येक व्यवहार का कोई न कोई उद्देश्य होता है।

③ प्रत्येक व्यवहार का कारण एक मूल प्रवृत्ति होती है जो कि पन्थ होता है।

④ मैकडगल ने भी संरचनावाद की निंदा की है और चेतना को एक पुरा स्वप्न कहा है।

⑤ मैकडगल ने मनो विज्ञान में पहली बार व्यवहार शब्द का प्रयोग किया है।

* अभिप्रेरणा का मूल प्रवृत्ति का विस्तार :- (मैंग्रगल)

मूल प्रवृत्ति	संवेग	मूल प्रवृत्ति	संवेग
भोजनान्वेषण	भुख	पुत्रकामना	वात्सल्य
पलायनवाद (भगना)	डर	आत्मगौरव	आत्मभिमान
प्रिहासा	आश्चर्यचकित	शरणागति	करुणा
रचनात्मकता	कृति भाव	दैन्य	हीन भावना
संगृह प्रवृत्ति	स्वामित्व	सामूहिकता	एकाकीपन
निवृत्ति	घृणा		
पुष्टता	क्रोध		
कामवासना	कामुकता		
हास	आमोद		

* मैंग्रगल Books :- ① An outline of Psychology

② An Introduction to social Psychology

Note * मैंग्रगल ने मूल प्रवृत्ति के तीन पक्ष बताये हैं।

संज्ञानात्मक

(गाली देना मद्दसुल होना)

भावनात्मक

(गुस्सा माना)

क्रियात्मक

(मारपीट एवं इससे लगे गाली देने)

④ * मनोविश्लेषणवाद :- (फ्रायड)

① 1900 के आस-पास ऑस्ट्रिया से फ्रायड के नेतृत्व में मनोविश्लेषणवाद का जन्म हुआ

② फ्रायड ने मनुष्य की अत्यधिक प्रवृत्तियाँ एवं अनेक काम वासना का कारण अचेतन को मानते हैं अचेतन मन के अध्ययन पर ध्यान दिया

③ फ्रायड ने मानव मस्तिष्क की तुलना एक विशाल तैरते हुए हिमखण्ड से की है। जिसका पानी के बाहर तैरता हिस्सा 10% भाग चेतन पक्ष है। इबा हिस्सा 90% भाग अचेतन मन है।

फ्रायड के प्रमुख सिद्धांत :-

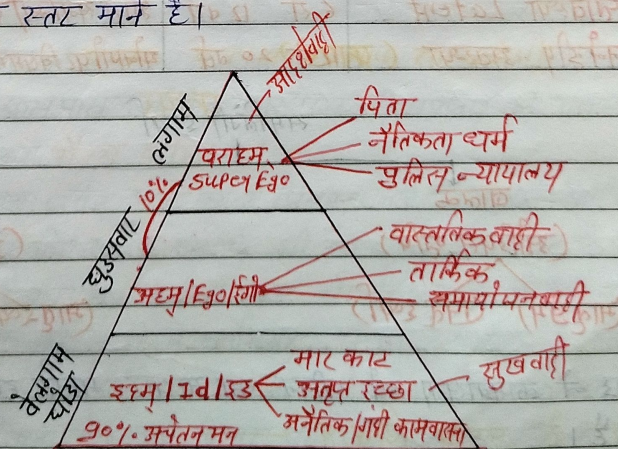
(A) चेतना का विभाजन :- फ्रायड ने चेतना के तीन स्तर माने हैं।

① ① चेतना (Consciousness) वर्तमान में हमारे संज्ञान में मौजूद हर जानकारी हमारा चेतन है।

- ② अर्ध-चेतन / अवचेतन :- (Subconsciousness) ऐसी जानकारी जो कुछ समय के लिए चेतन से बाहर चली गयी हो लेकिन अगरत पड़ने पर वापस चेतन में लायी जा सके अर्ध-चेतन कहलाता है।
- ③ अचेतन (Unconsciousness) :- ऐसा अनजाना उ, खतरा अपराधिक प्रवृत्ति जिसका कारण चेतन में कहीं मौजूद न हो अचेतन का हिस्सा माना जायेगा।

- ④ **फ्रायड का विस्मृति का सिद्धांत** :- फ्रायड ने विस्मृति का मन का सक्रिय विस्मृति का सिद्धांत दिया है जो जर्मन मनोवैज्ञानिक डर्मन एबिंगहाउस के निष्क्रिय विस्मृति / अनाभ्यास के विस्मृति के सिद्धांत के खिलाफ माना है। — फ्रायड के इस सिद्धांत के अनुसार हम पानबुझ कर (सक्रिय) अपनी दुखद यादों को तलपूर्वक (मन) अपनी चेतना या स्मृति से अलग कर देते हैं।
- ⑤ **स्वप्न विश्लेषण विधि का सिद्धांत फ्रायड** :- फ्रायड के अनुसार हमारे अचेतन मन में अतिरिक्त इच्छाओं का भण्डार है जो सुद की उकट करने के लिए बचे रहता है लेकिन हमारा चेतन उसे उकट नहीं देने देता इसलिए सुबान फिलमा नींद में ढुडबडलना या स्वप्नों के माध्यम से हमारा अचेतन सुद की उकट करता है।

- ⑥ **फ्रायड का व्यक्तित्व का विभाजन का सिद्धांत** :- फ्रायड ने चेतना की तरह व्यक्तित्व के भी तीन स्तर माने हैं।



- ⑦ एक अच्छे व्यक्तित्व के विकास के लिए इड और परम अहम् को अहम् का मार्गदर्शन स्वीकार करना चाहिए।

② इस का सर्वाधिक विकास शैशवावस्था में जबकि पराअधु का सर्वाधिक विकास बाल्यावस्था में होता है।

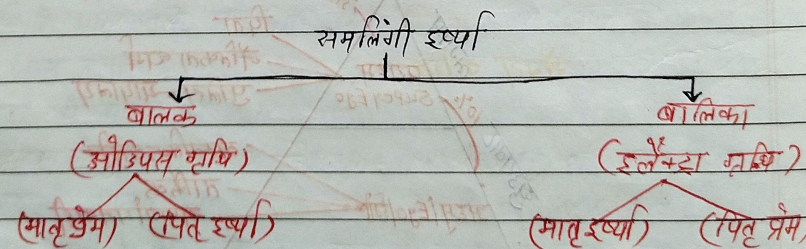
③ इस अधु तथा पराअधु को

```

  graph LR
    A[इस अधु तथा पराअधु को] --> B[आदर्शवादी]
    A --> C[वास्तविकतावादी]
    A --> D[सुखवादी]
    B --> E[कहा गया है।]
    C --> E
    D --> E
  
```

④ फ्रायड का मनोवैज्ञानिक विकास का सिद्धांत :- इसे फ्रायड की समित्व विकास की अवस्थाएँ भी कहते हैं। इस सिद्धांत में कुल (पाँच) अवस्थाएँ हैं स्वयं से तीसरी अवस्था को पूर्व विद्यालय की उम्र जबकि चौथी अवस्था को प्राथमिक विद्यालय की उम्र है। पाँच अवस्थाएँ कामवासना के विकास पर आधारित हैं जिसका कैड प्रत्येक अवस्था में बदलता रहता है।

क्र.	अवस्था का नाम	उम्र	कामवासना का कैड	उदाहरण
1	मुखीय Oral अवस्था	0 से 1 वर्ष	मुख पर	बैसी माँ के स्तनपान
2	गुदीय Anal अवस्था	1 से 3 वर्ष	गुदा पर	बच्चे की टॉयमैक्स क्लॉस
3	लैंगिक Phallic अवस्था	3 से 6 वर्ष	समलिंगी इच्छा	बुलू माता > सेक्स < बाली पिता कहा जाता है
4	गुप्तावस्था Latent	6 से 12 वर्ष	शान्त समलिंगी समूह	
5	जननेंद्रिय अवस्था	12 से 20 वर्ष	यौनगोप्य विषमलिंगी प्रेम	



Note फ्रायड ने कामवासना की जीवन का आधार मानते हुए इसे लिबिडो (Libido) कहा है।

* फ्रायड Books — ① The Principles of Psychoanalysis
 ② The Interpretation of Dreams

5 * व्यवहारवाद :- (Behaviourism) वाटसन

- ① (1913) के आस पास अमेरिका के हॉकिंस विश्व विद्यालय से प्रो. जे. बी. वाटसन के मैगल में व्यवहारवाद का जन्म हुआ।
- ② वाटसन ने पुष्ट एवं विनियम जैसा के चेतना के अध्ययन को घट करके नकार दिया कि चेतना का स्वरूप (अमूर्त) एवं अस्पष्ट है।
- ③ व्यक्ति मानव का बाहरी व्यवहार दिखायी पड़ता है इस लिए इसका निष्पक्ष अवलोकन किया जा सकता है। इसीलिए यह संप्रदाय व्यवहारवाद कहलाया।
- ④ उद्दीपक हमेशा बाहरी वातावरण में होता है।
- ⑤ जन्म के समय सभी बालक समान होते हैं।
- ⑥ अल्बर्ट नामक एक छोटे बालक का अध्ययन करके वाटसन ने यह निष्कर्ष निकाला कि नवजात शिशु में भय, क्रोध, स्नेह तीन संवेग होते हैं।
- ⑦ बाहरी व्यवहार के अध्ययन के कारण ही वाटसन की विधि को वाइयर्सन/वाटर्सन विधि भी कहा जाता है।
- ⑧ वाटसन ने अपने सिद्धांत पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Behaviourism) व्यवहारवाद लिखी है।
- ⑨ इसके अलावा वाटसन ने [S-O-R] सिद्धांत का प्रस्ताव भी प्रेश किया है।
- ⑩ यह वाटसन का ही योगदान है कि आधुनिक मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा जाता है।

6 * गेस्टाल्टवाद :-

- ① (1912) के आस पास जर्मनी के गेस्टाल्टवादी संप्रदाय की शुरुआत मानी जाती है जिसके जनक मैक्स वर्तीमा हैं।
- ② गेस्टाल्ट शब्द जर्मन भाषा का है जिसका अर्थ है सम्पूर्ण आकृति अर्थात् समस्या समाधान के लिए सम्पूर्ण समस्या की जानकारी आवश्यक है।
- ③ इसी लिए शिक्षण क्षेत्र पूर्ण से अंश को गेस्टाल्टवाद की देन माना जाता है।
- ④ गेस्टाल्टवाद की दृष्टि में प्रणालीवाद, सम्पूर्णवाद, समग्रवाद, अवयवीवाद, या प्रणालीवाद, प्रणालीवाद आदि नामों से भी जाना जाता है।
- ⑤ गेस्टाल्टवाद एक संज्ञानवादी विचार धारा है जो अविगम को एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करता है। परंतु अंतिम समग्र परिस्थित का अवलोकन करते हुए उपलब्ध सभी विकल्पों पर विचार करते हुए सभी पक्षों पर चिंतन करके सही विकल्प का चयन करके समस्या समाधान कर लेता है।
- ⑥ अर्थात् अविगम एक निश्चित पूर्ण प्रक्रिया है जो किसी भी प्रकार के छुट्टे एवं अवांछ का पोषण नहीं है।

(4) गैस्टाल्टवादी विचारधारा के समर्थकों में वहीमि के अलावा, कोफका, कुर्टलेविन तथा कोहलर के नाम प्रसिद्ध हैं —

(5) कोहलर ने गैस्टाल्टवादी विचारधारा के सिद्धांत हेतु सबसे ज्यादा काम किया

(9) कोहलर को एक कम्पनी थाय प्रथम विश्व युद्ध के विनाशकारी प्रभाव का अध्ययन पानवरी पर करने का कार्य लिया गया

(10) कोहलर थाय यह अध्ययन टैनरिफ द्वीप के केनारि शहर में किया गया

(11) इस प्रयोग में जस्तव में कुल 6 वनमानुष थे लेकिन सभी उसी प्रयोग सुलतान पर बिभेगये

(12) सुलतान पर किये गये कुल प्रयोगों की संख्या 3 थी जिसमें 2 प्रयोग सबसे बाले और एक प्रयोग लड़ी वाला था।

[7] * अधिगम का सुझाव का सिद्धांत — ① सुझाव को इंटर्नेटलिजिगि, पुरेका, अथ, अनुभव आदि नामों से भी जानते हैं।

② समस्या समाधान के दौरान उपलब्ध सभी विकल्पों पर विचार करते हुये अचानक ही सही विकल्प का चयन करके माध्यम एवं लक्ष्य के बीच अर्पणपूर्ण संबंध स्थापित करके समस्या समाधान कर लेना ही सुझाव है।

[8] * कोहलर का अधिगम स्थानान्तरण का आरोपण का सिद्धांत — पहले और बाद के अधिगम में पहले तक समानता पायी जायेगी वहाँ तक इबादा नहीं सीखना पड़ेगा, अर्थात् स्थानान्तरण अधिगम की दो परिस्थितियों में वही तक होगा पहले तक दोनों में समानता पायी जायेगी।

जैसे Day-1 A B C अग्रेजी बर्ड माला के तीन आंतर सीखें

Day-2 A B C D E F - 6 वर्ण सीखें

→ Day-2 में उड़ाने के तीन वर्ण सीखें पहले तीन उड़ाने Day-1 सीखें हैं

यही समानता है।

Note कोहलर प्रमुख Books — The Mentality of Apes (वनमानुषों की मानसिकता) The Task of Gestalt (गैस्टाल्ट के कार्य)

* कोहलर के अनुसार सुझाव पैदा होने के लिए परिस्थिति का प्रत्यक्ष गहन (Perceptual Organization) करना होता है।

- 3 * क्षेत्र सिद्धांत :- ① स्वविज्ञात का जनक जर्मन मनोवैज्ञानिक कर्ल लेविन की माना जाता है।
- ② युद्धात में लेविन गैस्टाल्टवादी विचार धारा से जुड़े थे - लेकिन बाद में उन्होंने अपना युद्ध का एक सिद्धांत दिया जिससे हम क्षेत्र सिद्धांत के नाम से जानते हैं।
- ③ क्षेत्र सिद्धांत गतिशील मनोविज्ञान (Dynamic Psychology) पर आधारित है। जिसके जनक वॉलफ माने जाते हैं।
- ④ बाद में वातावरण पर जोर देने के कारण लेविन ने युद्ध की गैस्टाल्टवादी विचार धारा से अलग कर लिया।
- ⑤ लेविन के अनुसार अविगम या अव्यक्त का अवधार वातावरण एवं व्यक्त की अंतःक्रिया का उत्पाद होता है।

अर्थात - $L/B = E/P$

अविगम/अव्यक्त वातावरण/व्यक्ति

- ⑥ लेविन के अनुसार व्यक्त एवं उसके वातावरण के बीच कई तरह के संघर्ष चलते रहते हैं :-
 लेविन ने व्यक्त एवं वातावरण के बीच निम्न लिखित 4 प्रकार के संघर्ष बताये हैं। —

① ग्राह-ग्राह संघर्ष (Approach-Approach conflict) :-

जब दो या दो से अधिक विकल्पों में से सभी पसन्द हो पर चयन किसी एक का ही करना हो ऐसे संघर्ष को ग्राह-ग्राह संघर्ष कहते हैं।
जैसे - प्यार से प्यार है लेकिन पैसे का क्या? मतलब लालना (कहते हैं)।

② परिहार-परिहार (Avoidance-Avoidance conflict) :-

जब दो या दो से अधिक विकल्पों में से कोई भी पसन्द न हो फिर किसी एक का चयन करना पड़े तो ऐसे संघर्ष को परिहार-2 संघर्ष कहा जायेगा जैसे - कुछ झोड़ ज्वाई के बीच किसी एक चयन करना

③ ग्राह-परिहार संघर्ष :- ग्राह का अर्थ - पाना / परिहार का अर्थ - त्यागना

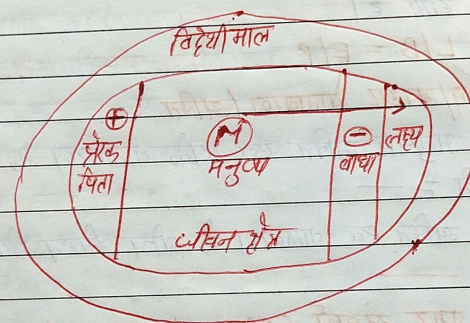
जब व्यक्त किसी घटना या वस्तु से जुड़े एक पक्ष को पाना चाहता है जबकि उसी पक्ष निर्भर इसके पक्ष को त्यागना चाहता है तो ऐसे में ग्राह - परिहार संघर्ष होगा जैसे - एक व्यक्त दूर ही पाना चाहता है लेकिन वह उतना सामान नहीं खरीद सकता जिस पर छूट आती है।

④ परिहार-ग्राह संघर्ष / बड़ ग्राह परिहार संघर्ष (Multiple Approach Avoidance conflict)

जब व्यक्त कई ग्राह परिहार संघर्ष के बीच फंसा हो जैसे एक लड़की की नौकरी उसी शहर में लग गयी है जिसमें वह लड़का भी रह कर नौकरी करता है जिससे उसकी शादी होने पा रही है लेकिन उसे अपनी सहेलियों एवं मायके के दूर जाने का मन है।

* लैविन के प्रमुख शब्द —

- ① कर्षण (Valance) — कर्षण वह शक्ति है जिससे किसी कार्य का होना या न होना निश्चित होता है।
- ② सदिश (Vactions) — लक्ष्य की दिशा में किये गये प्रयास।
- ③ बाधा (Hindrance) — लक्ष्य प्राप्ति के दौरान आने वाली बाधाएँ।
- ④ गतिक (Locomotion) — बाधा को दूर करके लक्ष्य की ओर चलते रहना।
- ⑤ जीवन क्षेत्र (Life space) — वह वस्तु या क्षेत्र जो मनुष्य की पहुँच के अन्दर है।
- ⑥ विदेशी माल सामान (Foreign Hull) — वह वस्तु या क्षेत्र जो मनुष्य की पहुँच के अन्दर है।



* इस सिद्धान्त के निम्नलिखित नाम हैं —

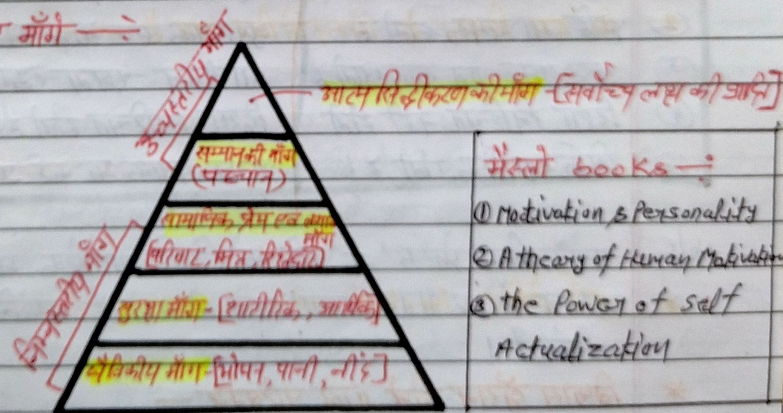
- ① क्षेत्र सिद्धान्त (Field theory)
- ② तलरूप सिद्धान्त (Surface theory)
- ③ आकृति आघात सिद्धान्त (Topological theory)
- ④ जीवन क्षेत्र सिद्धान्त (Life Space theory)

* कुछ लेविन - books —

- ① A Dynamic theory of Personality
- ② Topological Psychology
- ③ Field Theory in Social Science

- * मानवतावाद :- ① मानवतावाद का जनक अब्राहम मैस्लो को माना जाता है।
- ② यह सिद्धांत संस्थापक के मनोविश्लेषणवादी विचार चाय के विरुद्ध आया
- ③ परांपरा परांपरा ने मनुष्य के निर्णयों पर बिनायकारी इदम् के प्रभाव को दायी माना है तथा अचेतन को बरीपता दी है वही पर मैस्लो ने मानवता के स्मरण पर पहलु पर पौकस किया है।
- ④ इसके विरुद्ध मैस्लो मानते थे कि मनुष्य एक तिलकशील प्राणी है जो कठिन परिश्रम करके चेतन में रहकर इसरी के हित को दयान में रहकर नस्यपापि की गहरे जाता है।
- ⑤ मैस्लो के अनुसार सभी लचै वृद्धि एवं विकास के लिए कठोर परिश्रम करते हैं।
- ⑥ मैस्लो का मनोविज्ञान में सबसे बड़ा योगदान उनका अभिप्रेरण का पदानुक्रमिक सिद्धांत है जिसमें पाँच प्रकार की माँगों का वर्णन है
- ⑦ इन माँगों को एक त्रिभुज के अक्ष उपरिष्ठ किया गया है इस त्रिभुज को मैस्लो का त्रिभुज कहते हैं।
- ⑧ इसमें से पहली तीन माँगों को निम्न स्तरीय माँग पवकि बाढ़ की दो माँगों को उच्च स्तरीय माँग कहा जाता है।
- ⑨ मैस्लो के अनुसार उनकी पाँचवी माँग आत्मसिद्धिकरण माँग को अप्र करना अत्यंत कठिन है केवल पाँच प्रतिशत लोग ही इस माँग को पूरी कर पाते हैं।

* मैस्लो की पाँच माँग :-



मैस्लो books :-

- ① Motivation & Personality
- ② A theory of Human Motivation
- ③ The Power of Self Actualization

* सिद्धांत के कुछ नाम :-

- पदानुक्रमिक माँग का सिद्धांत
- माँग एवं आपूर्ति का सिद्धांत
- नाभिकीय माँग का सिद्धांत
- मानवता सिद्धांत
- आत्म सिद्धिकरण या स्वपराधिकरण कर्ण का सिद्धांत

- [11] *** विकास का अर्थ — किसी जीवी उस समता विशेषता या आकृति का नए रूप में पुनर्लेना जो उससे पहले मौजूद नहीं थी विकास कहलायेगा।

प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गयी विकास पर परिभाषा —

- * बुइवर के अनुसार — विकास बालक के वृष्टानुक्रम एवं वातावरण के गुणनफल का परिणाम है।
- * स्किनर के अनुसार — विकास एक सतत एवं धीमी प्रक्रिया है।
- * हरलॉक के अनुसार — विकास क्रमिक परिवर्तनों की एक श्रृंखला है। जिसके फलस्वरूप जीवन आकृतियाँ एवं विशेषताओं का पुनर्लेन होता है।
- * गैसल के अनुसार — विकास एक अनुपातों से बढ़कर है जिसका निरीक्षण मूल्यक्रम तथा शरीर रचना संग विच्छेदण, एवं व्यवहारत्मक इन तीन स्तरों में मापन भी किया जा सकता है।
- * मुनरो के अनुसार — विकास भ्रूणावस्था से वृद्धावस्था तक होने वाले परिवर्तनों की श्रृंखला का नाम है।
- * बुइ एवं विकास में अंतर —

बुइ	विकास
① मूर्त होती है।	अमूर्त होता है।
② बुइ मात्रात्मक होती है।	गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों होता है।
③ कुछ समय बात रुक जाती है।	आपस में चलता रहता है।
④ दिशा निश्चित नहीं होती।	दिशा निश्चित होती है।
⑤ सिर्फ शारीरिक होती है।	अत्यंत व्यापक या कई प्रकार का होता है।

Note मनावैज्ञानिक 'फ्रेन्क' ने बुइ को सिर्फ शारीरिक माना है।

- * तात्पर्य में यह अंतर इतना लाभ भी नहीं है क्योंकि बुइ एवं विकास साथ-साथ चलते हैं।

* विकास दौरान होने वाले परिवर्तन —

हरलॉक मद्देनजर विकास के दौरान होने वाले 4 परिवर्तनों का निम्नलिखित

- ① नवीन आकृतियों एवं आकृतियों का पुनर्लेन — जैसे पुनर्लेन के कुछ समय बाद बालक में इष्ट के दाँतों का दिखना और पुनर्लेन के कुछ महीनों बाद रेंगना।
- ② पुरानी आकृतियों एवं पुरानी आकृतियों का विलोपन → जैसे — पुनर्लेन के आने पर इष्ट के पुराने दाँतों की पुरानी आकृति एवं चलना सीख लेने के बाद रेंगने की पुरानी आकृति का विलोपन गायब होना।

③ अनुपात में परिवर्तन →

जन्म के समय मानव शिशु सिर अन्य अंगों के अनुपात में ज्यादा भारी होता है लेकिन बाद के वर्षों में हाथ-पैर जैसे अन्य अंग सिर के अनुपात में ज्यादा भारी हो जाते हैं।

④ लम्बाई, चौड़ाई, वजन आदि में परिवर्तन → विकास की अवस्था में लम्बाई-चौड़ाई वजन आदि भी बदलते रहते हैं।

→ विज्ञान

* विकास के सिद्धांत → जीव वैज्ञानिकों ने विकास के कुछ सिद्धांत माने हैं इनमें प्रमुख सिद्धांत निम्न लिखित हैं।

① निरंतरता का सिद्धांत → विकास अलग-अलग तंत्रों में आधीन-अलग रहता है।

② सरल से जटिल का सिद्धांत → विकास की शुरुआती आकृति सरल और बाद की जटिल होती है जैसे - जीव एक सरल आकृति है जबकि उड़ी बीघ से प्रसृत पौधा एक जटिल आकृति है।

③ अंतःसम्बंध का सिद्धांत → क्योंकि कि विकास के सभी पक्ष आपस में जुड़े हैं शारीरिक विकास अच्छे मानसिक विकास का भी सुचक है।

④ अवसन्न गति का सिद्धांत → विकास गति हमेशा एक जैसे नहीं रहती है अर्थात् यह धीमी-धीमी जाती है उदा. शारीरिक विकास शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था तेष और जीमी होना इसका उदा. है।

⑤ वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धांत → दुनिया में कि-ही दो बच्चों में विकास की दर एक जैसी नहीं होती अर्थात् विकास दर में कुछ न कुछ अंतर पलट पाये पाते हैं चाहे वे भुइया बालक ही क्यों न हो।

⑥ वंशानुक्रम एवं वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धांत → विकास एक तरफा सिर्फ वंशानुक्रम या सिर्फ वातावरण का परिणाम न होकर दोनों की अंतःक्रिया का परिणाम होता है तोप और मानव इनके उदा. हैं।

⑦ सिफैलीकाउडल (शिरो-मुखी) दिशा का सिद्धांत → विकास सिर से पैर अर्थात् पीछे से आगे की ओर होता है।

⑧ नजदीक दूर या केन्द्र से बाहर की ओर का सिद्धांत (Proximo-Distal) → विकास के दौरान पहले नजदीक एवं केन्द्र अंगों का विकास होगा और बाद में दूर के एत बाहरी अंगों का विकास होगा। जैसे मानव शिशु के केन्द्र अंग के रूप में छाती का विकास होने के बाद नजदीकी अंग के रूप में पहले भुजा का विकास होगा फिर दूर के अंगों का विकास होगा।

* हम इस भाग के सन्नर्गत विद्वानों द्वारा दिये गये विकास के सिद्धांतों का अवलोकन करेंगे। —

- ① मनोसामाजिक विकास का सिद्धान्त
- ② भाषा विकास का सिद्धान्त
- ③ वाङ्मयिकी का सिद्धान्त
- ④ पिपापे का सिद्धान्त
- ⑤ कोहलबर्ग का सिद्धान्त

* ① मनोसामाजिक विकास का सिद्धान्त —

- ① इस सिद्धान्त के प्रतिपादक 'एरिक एरिक्सन' हैं जो शुरुआत में फ्रायड के सिद्धांत को अपनाने लगे थे।
- ② फ्रायड के सिद्धान्त में काम बालन की अवस्था से ज्यादा जोर दिया गया है जिससे एरिक्सन सहमत नहीं थे।
- ③ इस लिए उन्होंने मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के विकास का मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त दिया है। जिसमें लैंगिक विकास की प्रगट सामाजिक विकास पर जोर दिया गया है।
- ④ इस सिद्धान्त में कुल 8 अवस्थाएँ हैं तथा प्रत्येक अवस्था में दो विशेषताएँ बनाम शब्द से जुड़ी हैं। जिनमें से एक सकारात्मक और दूसरी नकारात्मक है।
- ⑤ प्रत्येक अवस्था की सफलतापूर्वक प्रतिक्रिया पर एक गुण का जन्म होता है।
- ⑥ प्रत्येक-परण एक निश्चित क्रम में आती रहता है। तथा अन्तिम में सामाजिक गुण भरने का प्रयास करता है।
- ⑦ एरिक एरिक्सन ने बाल्यावस्था की पहचान संकट की उम्र कही है।
- ⑧ हम अब एरिक्सन द्वारा दी गयी 8 अवस्थाओं के बारे में जानेंगे —

* 8 अवस्थाएँ एरिक एरिक्सन —

क्र.	अवस्था का नाम	उम्र	पैदा होने वाला गुण
1.	विश्वास बनाम अविश्वास	0 से 18 माह	आशा
2.	स्वायत्तता बनाम शर्म	18 माह से 3 वर्ष	इच्छा शक्ति
3.	प्रेम बनाम अपराध बोध	3 से 5 वर्ष	उद्देष्ट्यता प्रवृत्ति
4.	परिश्रम बनाम हीनता	5 से 13 वर्ष	प्रतियोगिता भावना
5.	पहचान बनाम भ्रम	13 से 21 वर्ष	व्यक्तिगतता
6.	लगाव बनाम विलीनता	21 से 40 वर्ष	प्यार
7.	उत्पादकता बनाम स्थिरता	40 से 65 वर्ष	प्रसन्नता
8.	सम्पूर्णता बनाम निराशा	65 से आगे	बुद्धिमानता

⇒ book

- ① Childhood & Society (बचपन एवं समाज)
- ② Identity & Life Cycle (पहचान एवं जीवन-चक्र)
- ③ Identity Youth & Adults (पहचान युवा एवं पहचान संकर)

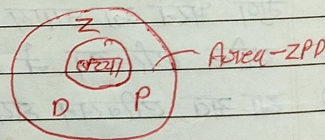
* लेव सिमनोविच वाइगोत्सकी —:

- ① रूसी मूल के मनोवैज्ञानिक वाइगोत्सकी को निम्न लिखित सिद्धांतों के लिए जाना जाता है।

(A) सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का सिद्धांत → इस सिद्धांत को सामाजिक संरचना सिद्धांत। सामाजिक रचनावाद सिद्धांत। सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत के नाम से भी जानते हैं इसका सामाजिक अंतःक्रिया या रचना की भाषा भाषन-उपन की प्रक्रिया पर निर्धार करता है।

(B) व्यापक ज्ञानी इसरा (MKO) More Knowledgeable Other → बच्चे उसी क्षमता से सीखते हैं जो व्यापक उनकी अपेक्षा जानकार होता है जैसे माता-पिता, शिक्षक, व्यापक बुद्धिमानी सहायता।

(C) संभावित। नजदीकी समीपस्थ विकास क्षेत्र (ZPD) Zone of Proximal Development बालक के प्रदर्शन का वर्तमान स्तर अर्थात् वहाँ तक वह कुछ के ज्ञान से पहुँच सकता है तथा व्यक्त की सहायता मिलने पर प्राप्त किया जा सके वाला संभावित स्तर के बीच का खाली क्षेत्र (ZPD) कहलाता है।



(D) स्कैफोल्डिंग बैच निर्माण → इस शब्द को पाउ। पण्डित। मन्थान नामों से भी जानते हैं इसे अंग्रेजी में scaffolding के नाम से भी जानते हैं समरूप समाधान के दौरान शरण देना शुद्धता सहायता इफल बनाना भी सीखने के साथ-2 घटती जाती है और अंततः पूरी तरह से सहायता घी जाती है उसे स्कैफोल्डिंग कहते हैं जैसे किसी पात्र को उसके हाथों को धारण करने वाली लाइनों का शुद्धता शब्द बताना या किसी बालक को सहायता प्रदान करना।

Note

स्कैफोल्डिंग के मतगत ही गयी सहायता समरूप समाधान के दौरान ही गयी शुद्धता सहायता सहायता सहायता

* लॉरेन्स कोइलवर्ग :-

- (1) कोटलवर्ग जर्मन मूल के अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे जिन्हें हम मुख्यतः उनके नैतिक विकास के सिद्धान्त के लिए जानते हैं।
- (2) उनका यह सिद्धान्त कई काल्पनिक कहानियाँ से प्रेरित है जिनमें "हिंम वाली कहानी" सर्वाधिक प्रसिद्ध है।
- (3) कोटलवर्ग ने हिंम की इस कहानी की 10 से 16 वर्ष के कुछ बालकों को सुनाया जिनके उत्तरों से इस सिद्धान्त के तीन चरण बनाये गये हैं।
- (4) उनका यह प्रसिद्ध सिद्धान्त उनकी पुस्तक *The Psychology by Moral Develoment* से लिया गया है।

* सिध्दांत के शब्द =

इस विज्ञान की समझने के लिए स्वर्ण प्रयोग किये गये 3 शब्दों की समझ।
जल्दी है।

- जारी है।
- ① **नैतिक दुविधा (Moral Dilemma)** :- नैतिक विकल्पों A और B में से किसी एक का चयन करने के लिए पैदा हुई अवस्था को नैतिक दुविधा कहते हैं।
 - ② **नैतिक तर्कणा (Moral Reasoning)** :- नैतिक विकल्पों A और B में से किसी एक का चयन करने के लिए होने वाली तार्किक चिंतन प्रक्रिया नैतिक तर्कणा कहलाती है।
 - ③ **नैतिक संघर्ष (Moral Conflict)** :- नैतिक तर्कणा के बाद चयनित विकल्पों का संघर्ष में जाना है नैतिक संघर्ष है।

* सिद्धान्त के चरण :-

- * सिद्धान्त के चरण :-
- (1) इस सिद्धान्त में तीन चरण हैं तथा प्रत्येक चरण में दो उपचरण भी हैं।
 - (2) कौटिल्य मानते हैं कि उनके 6 वें चरण उपचरण में इन्धिया के बहुत ही कम लोग पहुँच पाते हैं (लगभग 4%) जैसे गांधी जी और मार्टिन लूथरकिंग
 - (3) 3 चरण निम्न लिखित हैं। —

इसके दो उपचरण निम्न लिखित हैं—

(A) दण्ड एवं जारापोलन चरण (Punishment & Reward)
 कुछ भी गलत नहीं है बस उसी काम को मत करना जिसके लिए
 दण्ड मिले।
 पॉपे:- दण्ड को दबा नहीं डरानी चाहिए क्योंकि अगर वह पकड़ें ग
 तो पुलिस उसे पीटेंगी। दण्ड देंगी।

जैसे-: दिव्य को दवा चुप लेनी-बाहिर क्योंकि दवा चुपाने से उसे दवा भी मिल जायेगी और उसे पैसा भी नहीं देना पड़ेगा।

② नैतिक चरण। परम्परावादी। रुढ़िवादी चरण :- (उम्र 10 से 13 वर्ष)
(Moral Traditional Stage)

(A) अंतर्वैयर्थि संबंध । अच्छा लउका । अच्छी लउकी अवस्था -०

जैसे ही मैंने देखा कि मैंने सही से लिखा है।
पूर्व :- भले ही दवा चुपचाप से टिप की कोई निजी जगह पर नहीं है तो
 उसे दवा चुपचाप लेनी चाहिए क्योंकि दवा चुपचाप से बड़ अपनी पत्नी की
 निगाह में एक अच्छा प्रति बन सकेगा। क्योंकि दवा अपने आप ही पत्नी के लिए

अगर किसी कार्य का कार्य सँ छवि अच्छी बनती है तो भी नहीं करना चाहिए अगर वह कार्य मानुष के खिलाफ है।

- ① * सारी मिछई खा ली पकड़े मत जाना वरना मार पड़ेगी (दण्ड एक मातापालन - चरण)
- ② * मार पड़े तो बी - चौरी का ली क्योंकि इससे अपना पैसा खरीदने में खर्च नहीं होगा (भारत के लोग)
- ③ * मैं गणित नहीं पढ़ना चाहता फिर भी पापा की खुश करने करने के लिए मैं गणित पढ़ूंगा (उत्तर वैयक्तिक अच्छी लड़की - चरण)
- ④ * भले ही अनाथ ~~हूँ~~ राम को पीटकर मैं बलाय में हीरो बन जाऊँगा क्योंकि राम गुंडा है फिर भी मैं उसे नहीं पीटूँगा क्योंकि सगडा कला कानूनी अपराध ~~काम~~
- ⑤ भले ही अनाथ हूँ अपना कानून के खिलाफ है फिर भी गाँव की मुख्तारी रखने के लिए मैं अनाथ हूँ लंगु (सामाजिक अनुभव)
- ⑥ भले ही पापा के मर्जी के खिलाफ इस लड़की से सारी कला सामाजिक रूप से गलत है तो भी मैं इस लड़की से शादी करूँगा क्योंकि यह अनाथ है।

* चीन पियाज :- (स्विटमटरलैण्ड)

- * चीन पियार्च - (स्विटजरलैण्ड)
- (1) स्विट्स मुल के अमेरिकी मनो वैज्ञानिक चीन पियार्च परी एक पन्तु विज्ञानी थे
 - (2) अपने कैरियर की शुरुआत में पियार्च ने बिर्न-साइमन के सहयोगी के रूप में फ्रांस में रहकर उनके बुद्धि परीक्षण पर एक सहयोगी के रूप में कार्य किया
 - (3) पियार्च को बिर्न-साइमन परीक्षण में ढेर सारी कमियां नजर आयीं जिनसे दूर करने के लिए पियार्च ने अपना "संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत" दिया
 - (4) उनका यह सिद्धांत उनकी एक बेटी और एक भतीजी के जन्म से लेकर लगभग 30 वर्ष की उम्र तक के प्रतिदिन के आचार पर किये गये मन्थन का परिणाम था।
 - (5) आइन्स्टीन ने कहा था कि इतना मुश्किल सिद्धांत इतनी आसान शर्तों में सिर्फ पियार्च ही ऐसा चीनियस ही दे सकता है।

(6) पियाप ने ज्ञान के तीन प्रकार माने हैं —

- (A) सामाजिक - पारंपरिक ज्ञान (Social - Conventional Knowledge) -
 रीति-रिवाज एवं सामाजिक सम्बंधों के प्रति जागरूकता
 (B) तार्किक - गणितीय ज्ञान (Logico-Mathematical Knowledge) -
 तर्क, धुमता एवं सामान्य लैन-ईन का ज्ञान
 (C) शारीरिक ज्ञान (Physical Knowledge) -
 शून ज्ञान के अक्षर लक्षित मात्र ध्रुव-प्यास तथा ठंडी-गर्मी आदि का ज्ञान आता है

- (7) * पियार्प एक रचना "रचनावादी" थे जिनका मतना था कि बच्चा एक नया वैज्ञानिक है जो अपनी रचना को रचना स्वरूप करता है।
- (8) बच्चे वातावरण से सक्रिय खोज-वीन करते सीखते हैं।
- (9) पियार्प के अनुसार विद्यालय एवं कक्षा-कक्ष संज्ञानात्मक विकास के लिए सबसे बेहतर स्थान हैं।

कामना एतद्वगत्या 33

- (10) पियार्प ने सीखने की प्रक्रिया में अनुकूलन (Adaptation) को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना है।
- (11) पियार्प का विकासात्मक मनोविज्ञान शिक्षण के विकासात्मक प्रतिमान तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विकासात्मक विधि का जनक भी माना जाता है।

(12) पियार्प की प्रमुख पुस्तकें :-

- The Psychology of the Child
- The Moral Judgement of the Child
- The Language & thought of the Child (भाषा विकास पर आधारित पुस्तक)
- The Psychology of Intelligence

पियार्प के प्रमुख सिद्धांत :- तीन सिद्धांत निम्न हैं।

- (1) संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
- (2) नैतिक विकास का सिद्धांत
- (3) भाषा एवं विचार का सिद्धांत

* संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत :-

पियार्प के इस सिद्धांत को समझने के लिए इस सिद्धांत में प्रयोग किये गये शब्दों की समझना पड़ती है।

(a) वस्तु स्थायित्व (Object Permanence) :-

भले ही वस्तु ओखी से ओझल हो गयी हो- लेकिन उसका अस्तित्व बना रहता है।

(b) मानसिक चित्रण (Mental formation) :-

वस्तु के न होने पर भी उसकी आकृति को अपनी मानस चटल पर उभार लेना। दिमाग में भर लेना या दिमाग में छवि बना लेना।

(c) जीववाद (Animism) -°

बच्चे अपने आस-पास की वस्तुओं वित्तों की आदि की जीवित समझ का भ्रम हो जाता है।

(v) आत्मकेन्द्रितता (Ego-centrism) -°

स्वभाव से बच्चे सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं तथा वे दूसरों के इच्छाओं को समझ नहीं पाते हैं जैसे- बच्चे ने मार्केट से देर सारे सामान उठा लिए उसने नहीं सोचा की पापा के पास इतने वित्तों की केलिए कैसे हैं या नहीं।

(e) अविलोमीयता / अनुक्रमण शीलता / अपलवाबीयता / अप्रतिवर्तितता (Unreciprocity)

शुक्राती बिड़ से आगे निकल जाने पर बालक का शुक्राती बिड़ पर वापस न लौट पाना अविलोमीयता जबकि लौट पाना विलोमीयता मानी जायेगी।

(f) संरक्षण का अभाव (Lack of Conservation) -°

शुक्राती आकृति में किसी भी प्रकार का बदलाव करने पर बालक द्वारा शुक्राती की भूल जाना संरक्षण का अभाव है जबकि यह रचना सिर्फ संरक्षण।

(g) केंद्रीकरण (centration) -°

बालक द्वारा किसी घटना या वस्तु के सिर्फ एक ही पक्ष तक सीमित रहना केंद्रीकरण जबकि कई पक्षों पर पर जाँच करना विकेंद्रीकरण है।

(h) वर्गीकरण (classification) -°

समानता और अंतर के आधार पर वस्तुओं की अलग-2 समुहों में रखना जैसे- पशु, गाय, कुत्ता, भैंस आदि को एकलक्ष और पक्षी-तोता, चिड़िया आदि को

(i) सूचकता (Indication) -°

इसे प्रतीकालमक चिह्न भी कहा जाता है जिसने चिह्न (Sign) तथा चिह्न (Symbol) सीखा जाता है।

जैसे- बच्चे से माँबाबल संगठना चिह्न का पुनः / मंदिर में पूजा करना चण्डीका तो यह संकेत पूजा का

(j) गणितीय सक्रिया (Mathematical operation) -°

(+), (-), (x), (÷) आदि चिह्न का ज्ञान होना

(k) कार्य-कारण सम्बन्ध -° (Cause & Effect Relationship)

यह बालक में तार्किक चिंतन की शुरुआत है जिसमें वह प्रत्येक कार्य के फल का तर्क या कारण जानना चाहता है।

जैसे धूप में कपड़े सुखाना (सुखाने का कारण) जानना अथवा सूर्य की दृष्टि

(1) न्याय निगमन (Syllogism) :-

दिये गये कथनों से अप्रत्यक्ष निष्कर्ष निकालना जैसे प्रत्येक मनुष्य के चेहरे पर दाँत हैं राम एक मनुष्य है अतः राम के चेहरे पर दाँत हैं।

(2) संकल्पनात्मक तर्कणा (Hypothetical Reasoning) :-

कल्पना करके तर्क करना जैसे - अगर सुखी पट आँसू सीपन न हो तो क्या सूखेगा।

(3) परावर्ती क्रिया (Reflex Action) :-

बच्चे जिस कार्य को सीख लेते हैं उसे बार-बार दोहराकर खुद करते हैं जैसे - संग्रह में देना, निकलना, कोई वस्तु डालकर खाना, सिक्का खाना इत्यादि परावर्ती क्रिया कहते हैं।

(4) स्कीम्स (Schemes) :-

किसी कार्य को करने का सही क्रम या पैटर्न ही स्कीम्स कहलाता है।
 जैसे बच्चा - खूब डूबकर नहाना → कपड़े पहनना → बैग लाटना → स्कूल जाना
 यह सही क्रम है यह क्रम बदला नहीं जा सकता है। पहले बैग लाकर दूसरा नहीं पहनी जा सकती।

(5) स्कीमा / प्राकृष (Schema) :- (व्यवस्थित रूप) - (स्कीमैटा)

बच्चों की जानकारी के छोटे-छोटे खण्डों को जिसमें वह अपनी जानकारीयों सहजकर रखता है स्कीमा कहलायेगा।
 पियाज ने स्कीमा को एक संज्ञानात्मक संरचना (cognitive structure) कहा है तथा उम्र एवं परिपक्वता बढ़ने के साथ-साथ स्कीमा में भी परिवर्तन आयेगा।

(6) साम्य साधारण / संतुलन (Equilibrium) :-

वह अवस्था जब बालक की जानकारीयों में किसी भी प्रकार का विरोध नहीं है साम्य साधारण कहलायेगा जैसे - प्रकृति में हर चीज अपनी जगह पर है।

(7) अनुकूलन (Adaptation) :-

नयी जानकारी प्राप्त होने से बालक का संतुलन बिगड़ जाता है और वापस संतुलन पर पहुँचने के लिए जानकारी को अपने हिसाब से ढालता है इसे अनुकूलन कहते हैं जिसके दो भाग हैं -

(A) समावेशन / सम्मिलन / आत्मसातीकरण (Assimilation) :-

जब नयी जानकारी को बिना अन्तर किये पुरानी जानकारी में घाँट देकर लिया जाये जैसे काला रंग समान होने के कारण काले को काला समझना।

(B) समायोजन (Accommodation) :-

(B) समायोजन (Accommodation) :-
समावेशन हाथ स्कीमा में भेजी गयी जानकारी को जाद में विरोध उत्पन्न होने पर जानकारी में अन्तर करना या संशोधन करना है। - काले रंग की समानता के कारण कोयल को कौवा समझने वाले बालक का आवाज के आधार पर अन्तर करना। समायोजन कहलायेगा।

(5) संगठन (organization) :-

संगठन (Organization) :-
प्रशासकीयों को स्वरूप में भेजने से पहले बालक उन्हें अपने तरीके से
सेट (सेट) करता है या अभिव्यक्त करता है इस संगठन कहते हैं।

* संज्ञानात्मक विकास के चरण :-

(1) इस सिद्धान्त में "चार चरण" हैं जहाँ कि गुणात्मक है।

(1) इत सिद्धांत में "चार चरण" है जहाँ कि गुणवत्ता बढ़ती है।
(2) सभी चरण स्थिर है यिनका नतीज क्रम बदलता जा सकता है न ही गुण बदल सकते हैं।

(31) एक चरण में आने वाले गुणों को दुबारा इसी चरण में नहीं लिखा जाता।

(4) चार (4) परण निम्न लिखित -

① संवेदी पेशीय । इन्द्रिय-गामक । इन्द्रिय जनित । शंशाबाध (0 से 2 वर्ष) :-

- वस्तु स्थायित्व
- मानसिक निरूपण
- परावर्ती क्रिया
- अनुकरण
- इन्द्रिय आधारित अधिगम
- स्मृति आधारित अधिगम
- लक्ष्य-मुखी अवधार की शुरुआत
- कल्पनात्मक खेल की शुरुआत (बच्चे अपनी परछाई की इसमें बच्चा समझता है)
- मूल प्रतीकत्मक प्रवृत्तात्मक अवधार (हसना, रोना)

② पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2 से 7 वर्ष) Pre-Operational Phase - 9

प्रियांशु ने इस अवस्था को दो भागों में बाँटा है। —

(A) पूर्व संप्रत्यात्मक अवस्था (2 से 4 वर्ष) :-

- (1) इस अवस्था में बालक में सूचकता का गुण विकसित हो जाता है जिसमें चिह्न और संकेत का ज्ञान शामिल है।
- (2) इस अवस्था में जीववाद तथा आत्मकेंद्रितता का गुण भी पैदा होता है।

(B) अंतः दृशी अंतः प्रज्ञा अवस्था (4 से 7 वर्ष) :-

- (1) अवलोकनीयता
- (2) संरक्षण का अभाव
- (3) कैलीकरण
- (4) लक्ष्यानुषंगी व्यवहार परिपक्व
- (5) काल्पनिक खेल परिपक्व
- (6) गिनती वर्णमाला, क्रम की युक्तता

Note: पिछाई ने जीववाद तथा आत्मकेंद्रितता को पूर्व संप्रत्यात्मक अवस्था की सीमा माना है।

③ मूर्त संप्रत्यात्मक अवस्था (7 से 11 वर्ष) / औपचारिक संप्रत्यात्मक अवस्था :-

- (1) विलोकनीयता
- (2) संरक्षण
- (3) विकेंद्रिकरण
- (4) क्रम परिपक्व
- (5) वर्गीकरण
- (6) श्रृंखला ज्ञान
- (7) गणितीय संक्रिया
- (8) कार्य कारण सम्बन्ध
- (9) तार्किक चिंतन की युक्तता
- (10) संख्या भाव एवं क्षेत्र की समझ

(4) अमूर्त संप्रत्यात्मक अवस्था / औपचारिक संप्रत्यात्मक अवस्था (11 से 18 वर्ष) :-

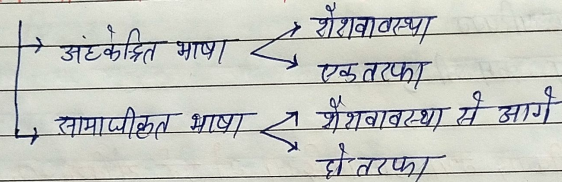
- | | |
|----------------------|---------------------------|
| (1) अमूर्त चिंतन | (4) तार्किक चिंतन परिपक्व |
| (2) निगमनात्मक चिंतन | (5) अपसारी चिंतन |
| (3) न्याय निगमन | (6) संकल्पनात्मक तर्कणा |

② * पियाई का भाषा एवं विचार का सिद्धांत :-

पियाई के भाषा एवं विचार के सिद्धांत की निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है।

(A) विचार भाषा से पहले → यह एक जानवर है यह वाक्य वास्तविक जानवर तथा किसी निर्दोष या असम्यक्त व्यक्ति दोनों के लिए उपयोग हो सकता है लेकिन दोनों ही पक्षों पर वाक्य एक ही के कारण इस भाषा से नहीं स्फुटित होलने वाले के विचार से पता चलेंगा अतः विचार भाषा पर आवे है।

(B) पियाई का भाषा का विभाजन → पियाई ने भाषा के दो प्रकार माने हैं



✓ * पियाई ने बच्चों के छुट्ट से बातें करने की अद्वैत भाषा या सामूहिक एकात्म (collective Monologue) कहा।

③ पियाई का नैतिक विकास का सिद्धांत :-

(1) पियाई का यह सिद्धांत वास्तव में कुछ बच्चा खेलने वाले बच्चों से प्रेरित है।

(2) इस सिद्धांत के लिए पियाई ने साक्षात्कार विधि का उपयोग किया

(3) यह सिद्धांत उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *The Moral Judgement of the Child* से लिया गया है।

* इस सिद्धांत के तीन चरण निम्न लिखित हैं।

(1) पूर्व नैतिक चरण (Pre Moral Phase) (0 से 5 वर्ष) →

इस चरण में बालक में नैतिकता का अभाव पाया जाता है।

छोटे-छोट में आयी मिठाई को बालक पूरी को गबड़ लेता है किसी को नहीं देता।

(2) पराधीन नैतिकता (नैतिक पराधीनता) (5 से 9 वर्ष) →

इस अवस्था में बालक को लगता है कि नैतिकता एक बाहरी शक्ति है जो माता-पिता या समाज द्वारा उन पर लाई जाती है।

परिवर्तन नहीं कर सकता है क्योंकि यह निश्चित है जैसे - नौकरी के लिए दूसरे देश नैतिकता के खिलाफ है।

(c) स्वायत्त / स्वधीन नैतिकता (नैतिक सापेक्षता) 9 से 10 वर्ष ->

बालक अब समझ जाता है कि नैतिकता किसी भी गहरी सत्ता या मार्ग-पिता द्वारा नहीं बनायी गयी है और न ही यह निश्चित होती है बल्कि यह तो परिस्थितिगत होती है जिस प्रकार के अनुसार बदला जा सकता है जैसे - अगर सभी दूसरे रहे हैं तो नौकरी के लिए दूसरे देश नैतिकता है।

या अगर छूट बनने से किसी की मान बच जाती है तो वहाँ छूट बनाना ही नैतिकता है।

Note

पियाजे के इस सिद्धांत की इसी एवं तीसरी अवस्था की क्रमशः विषमांगी नैतिकता एवं सद्व्यंगमक नैतिकता कहते हैं।

* Practice *

1. ^{पियाज्जे} वार्गोत्सकी ने बच्चों के खुद से बात करने की क्या कहा है (निजी बोली) (अद्वैतवादी)
2. ^{पियाज्जे} ने भाषा विकास पर अपनी कौनसी पुस्तक लिखी है (The Language of the Child)
3. ^{पियाज्जे} के अनुसार बालु स्थायित्व किस अवस्था में पनपता है (सक्रिय गणना)
4. अगर एक छात्र $3+2=5$ जानने के बाद गणना 3 और 2 पर नयी व्याख्या दे दे ^{पियाज्जे} की भाषा में क्या कहा (अपलवणीय)
5. वार्गोत्सकी के अनुसार MKO का पूर्ण रूप क्या है (More Knowledgeable Other)
6. कोटलबर्ग का सिद्धांत मुख्यतः किसी अवस्था की कहानी से प्रेरित है (द्विज)
7. कोटलबर्ग ने जिन बच्चों पर प्रयोग किया (द्विज की कहानी) उनकी उम्र क्या थी (10 से 16 वर्ष)
8. वार्गोत्सकी के सिद्धांत में विकास के किस पक्ष पर जोर दिया गया है (सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष पर)
9. ^{पियाज्जे} के अनुसार अगर एक बालक सिर्फ अपने इष्टि और को सम्मिलित है तो यह क्या कहा जाएगा (अद्वैतवादी)
10. ^{पियाज्जे} के सिद्धांत में जीवनाद किस चरण में आयेगा (पूर्व संक्रियात्मक चरण)
11. एरिक्सन के सिद्धांत की किस नाम से जाना जाता है (मनोसामाजिक विकास का सिद्धांत)
12. एरिक्सन के सिद्धांत में कितनी अवस्थाएँ हैं (8 अवस्थाएँ)
13. फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विकास के सिद्धांत की इसी अवस्था को ^{पियाज्जे} (सक्रिय गणना) कहा है
14. फ्रायड ने विस्मृति का कौनसा सिद्धांत दिया है (सक्रिय विस्मृति)
15. ब्रुनर ने संज्ञानात्मक विकास की कितनी अवस्था बतायी है (3 अवस्थाएँ)
16. संज्ञानात्मक रचनावाद के जनक कौन हैं (पियाज्जे, ब्रुनर)
17. ^{पियाज्जे} के अनुसार अद्वैतवादी भाषा का इसका नाम क्या है (सामाजिक एकात्मक)
18. ब्रुनर की तीसरी अवस्था का नाम क्या है (सांकेतिक)
19. ^{पियाज्जे} के अनुसार बालक डाय वस्तुओं को अलग-2 समुहों में रखने की क्षमता को क्या कहा जाता है और यह किस चरण में विकसित होती है (वर्गीकरण)
20. ^{पियाज्जे} के नैतिक विकास के किस चरण में बालक समझ जाता है कि नैतिकता परिस्थितिगत होती है (नैतिकता)

स्वाधीन नैतिकता

* अधिगम :- इस अध्याय में सबसे पहले अधिगम के प्रमुख सिद्धांत को पढ़ेंगे।

* एडविन रै गुथरी :-

प्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक "एडविन रै गुथरी" ने थॉर्नडाइक के दो सिद्धांतों को गलत सिद्ध करते हुए अधिगम का एक सिद्धांत दिया है जिसके निम्नलिखित नाम हैं।

- (1) समीपता का सिद्धांत (Contiguity theory of Learning)
- (2) एकल प्रयास अधिगम का सि० (Single Trial Learning)
- (3) उद्दीपक अनुक्रिया सादृश्य सि० (S-R Association)
- (4) प्रतिस्थापन/स्थानापन्न/स्थानांतरित अधिगम का सि० (Transposed Learning)

(1) समीपता का सिद्धांत :- अधिगामी अधिगम के दौरान उसी विफल या अनुक्रिया को वरीपता देता है जो उसके सबसे नज़दीक हो

✓ (2) एकल प्रयास अधिगम का सि० :- अगर अधिगामी या अधिगमकर्ता एक ही बार में सीख लेता है तो यह सिद्धांत थॉर्नडाइक के मुद्दे एवं प्रयास के सि० को गलत बता देता है।

✓ (3) उद्दीपक अनुक्रिया सादृश्य सि० :- अगर बिना पुरस्कार या पुनर्बलन के भी उद्दीपक से सही अनुक्रिया जुड़ गयी है (S-R सादृश्य) तो पुरस्कार या भावना देने की जरूरत ही क्या है। अर्थात् प्रभाव का नियम भी गलत धर्मक

(4) स्थानांतरित अधिगम का सिद्धांत :- अगर अधिगम की दो परिस्थितियाँ बिल्कुल एक जैसी हैं तो दो बार नहीं सीखना पड़ेगा बल्कि जो पहली बार सीखा गया है वही प्रत्येक बार स्थानांतरित होता रहेगा।

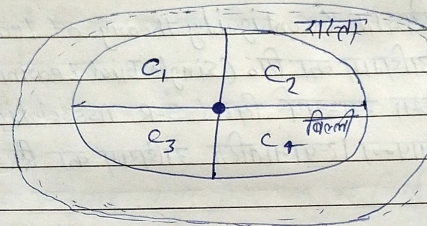
सिद्धांत से जुड़े प्रमुख तथ्य :-

(1) गुथरी एक मात्र ऐसे मनोवैज्ञानिक हैं जिन्होंने अपने सिद्धांत में पुरस्कार या पुनर्बलन की कोई महत्व नहीं दिया है।

(2) गुथरी मानते थे कि पुनर्बलन की जरूरत सीखने के लिए नहीं है। अपितु विस्मृति से बचाने के लिए है।

→ (सीखी गयी जानकारी को भूलना)

- (3) गुथरी ने अपने सिद्धान्त के लिए अपने सहयोगी डॉट्स के साथ मिलकर बिल्लियों एवं खरगोशों पर प्रयोग किया इसलिए इन प्रयोगों को गुथरी डॉट्स प्रयोग कहते हैं।
- (4) थान्डाक की तरह गुथरी के प्रयोग के बक्सों को भी पडली बक्सा (Puzzle Box) पडली पेकिवा कहा जाता है तथा गुथरी ने अपने सिद्धान्त पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *Cat's Den Puzzle box* (पडली बक्सों में बिल्लियों)



- (1) समीपता का सि०
- (2) एकल प्रयास अधि० सि०
- (3) S-R सादृश्य
- (4) स्थानांतरित अधि० सि०

* एडवर्ड सी वॉलमैन :-

- (1) वॉलमैन ने अधिगम का एक सिद्धान्त दिया है जिसके निम्नलिखित नाम हैं।

- ① चिह्न अधिगम (Sign Learning)
- ② स्थान-अधिगम (Place Learning)
- ③ उद्दीपक-उद्दीपक अधिगम (S-S)
- ④ अज्ञात-अधिगम (Latent Learning)
- ⑤ उद्दीपक निष्पादन अधिगम (Stimulus Performance Theory)
- ⑥ चिह्न प्रत्याशा सिद्धान्त (Sign Expectancy Theory)

→ नाम के अर्थ

- ① हमारा अधिगम अनुक्रिया से नहीं अपितु चिन्हा से होता है।
- ② हम स्थान द्वारा सीखते हैं यह अनुक्रिया मायने नहीं रखती है।
- ③ हम उद्दीपक से उद्दीपक सीखते हैं स्वयं को भी गयी अनुक्रिया मायने नहीं रखती है।
- ④ कई बार हम मनमाने में सीख जाते हैं लेकिन हमें पता तब चलता है जब जरूरत पड़ती है।
- ⑤ उद्दीपक प्रस्तुत करने पर अनुक्रिया करने से कुछ नहीं होता प्रदर्श में सुधार भी होता चाहिए।
- ⑥ हमें जीवन के हर मोड़ पर चिह्न मिलने की उम्मीद होती है परिणाम

प्रमुख तथ्य:

- (1) वॉलमैन ने अपने सिद्धांत के लिए अपना प्रसिद्ध पुस्तक मनचित्र प्रयोग किया जो पूछे पर आधारित था।
- (2) इसी प्रयोग के दौरान उन्होंने अपना खबरे प्रसिद्ध शब्द "संज्ञानात्मक मानचित्र" (Cognitive Map) दिया।
- (3) वॉलमैन का सिद्धांत अधिगम का "संज्ञानवादी" सिद्धांत है।
- (4) दुसरी ही तरह वॉलमैन ने भी अपने सिद्धांत में पुनर्बलन को कोई खास महत्व नहीं दिया है।
- (5) वॉलमैन ने अपने सिद्धांत पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Cognitive Map in Roots & Men) लिखी है।

* रडवर्ड बी थॉर्नडाइक -

- (1) अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थॉर्नडाइक को शिक्षा मनोविज्ञान एवं पशु मनोविज्ञान का जनक भी माना जाता है।
- (2) वैसे ही उन्होंने कई विद्यार्थी की रचना की है जिसमें कुछ प्रमुख सिद्धांत निम्न लिखित हैं।

① थॉर्नडाइक का अधिगम का सिद्धांत → सुविधा की दृष्टि से थॉर्नडाइक के अधिगम के सिद्धांत को निम्नलिखित भागों में बांट सकते हैं।

(A) अधिगम के प्रमुख या प्राथमिक नियम (Primary Laws of Learning)
थॉर्नडाइक ने अधिगम के तीन प्रमुख प्राथमिक नियम माने हैं जो निम्न हैं।

- (1) तत्परता का नियम (The Laws of Readiness)
- (2) अभ्यास का नियम (The Laws of Exercise)
- (3) प्रभाव का नियम (The Law of Effect)

Note थॉर्नडाइक ने बाद में अपने अभ्यास के नियम को दो भागों में बांटा जिसमें हम उपयोग और अनुप्रयोग का नियम कहते हैं तथा इसमें उपयोग के नियम को स्मृति का नियम तथा अनुप्रयोग के नियम को विस्मृति का नियम माना जाता है।

Note 2 बाइ में थॉर्नडाइक ने अपने प्रभाव के नियम को भी दो भागों में बांटा

- (i) संगति का नियम
 - (ii) असंगति का नियम
- (3) थॉर्नडाइक ने अपने तीन प्रमुख नियमों में प्रभाव के नियम को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है
- (4) थॉर्नडाइक के प्रभाव के नियम से ही स्किनर के सिद्धान्त की उत्पत्ति हुई है

(B) थॉर्नडाइक के प्रमुख 5 नियम (Secondary Laws of Learning) :-
थॉर्नडाइक ने अधिगम के 5 गौण नियम बताये जो निम्नलिखित हैं।

① बहु अनुक्रिया का नियम :-

सही अनुक्रिया होने से पहले देर सारी गलत - 2 अनुक्रियाएँ होतीं तब थॉर्नडाइक का धृति एवं प्रयास का नियम भी इसी नियम से निकलता है।

② मानसिक दशा का नियम (Mental Disposition) :-

अधिगम तभी प्रभावशाली होगा जब अधिगामी मानसिक रूप से स्वस्थ होगा।

③ आशिक क्रिया। तबों की पूर्व समर्थता का नियम (Prepotency) :-

दिमे गये कई उद्दीपकों में से प्राणी अनुक्रिया देतु उसी उद्दीपक का चयन करेगा जो उसकी आवश्यकता को पूरा करने में समर्थ होगा।

④ सादृश्यता का नियम (Affinity) :-

अगर अधिगम की दो परिस्थितियाँ एक जैसी होंगी तो दुबारा नहीं सीखा पड़ेगा यद्यपि समानता का नियम कार्य करेगा।

⑤ सादृश्यतात्मक स्थानान्तरण का नियम (The Law of Associative Transfer) :-

थॉर्नडाइक का यह सिद्धान्त स्थानान्तरण के चरण को दर्शाता है जिसका अर्थ है कि स्थानान्तरण समानता पर निर्भर है अर्थात् अगर दो परिस्थितियाँ समानता 100% हैं तो स्थानान्तरण भी 100% होगा।

(C) थॉर्नडाइक के अधिगम के सिद्धान्त के नाम → इस सिद्धान्त के निम्न लिखित नाम हैं।

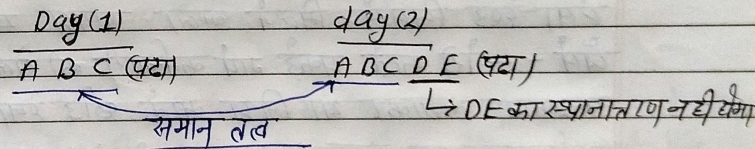
- ① उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त (S-R) :-
- ② उद्दीपक अनुक्रिया बंध सिद्धान्त (S-R Bond)
- ③ बंधवाद संयोजनवाद का सिद्धान्त (Principle of Bonding)
- ④ संबंधवाद का सिद्धान्त (Connectionism)
- ⑤ छुरि एवं प्रयास का सिद्धान्त (Trial & Errors Method)

* सि० नाम-अर्थ *

① (उद्दीपक) (सही अनुक्रिया)
S — छुरि एवं प्रयास — R

most

(0) थॉर्नडाइक का अधिगम स्थानान्तरण का समान तबों का सिद्धान्त :-
यह थॉर्नडाइक का अधिगम स्थानान्तरण का सिद्धान्त है जिसका अर्थ है कि पहले और बाद के अधिगम में स्थानान्तरण बराबरी तक होगा यदि तब तब समान है।



* थॉर्नडाइक - (Books) :-

- (1) Animal Intelligence
- (2) Education Psychology
- (3) Education: A first book

Note थॉर्नडाइक के प्रयोग के बक्खों को पहली बक्खा Puzzle Box कहते हैं

* B.F. स्किनर -°

निवासी = अमेरिका
 प्रयोग = दो $\leftarrow$ न्यू यॉर्क (1933)
 शिक्षा = तीन $\leftarrow$ केंब्रिज (1943)
 सक्रिय अनुकूलन का विधान
 पुनर्बलन की सूची
 पुनर्बलन का विधान

पुस्तकें = ① The Behaviour of Organisms
 ② Science & Human Behaviour
 ③ The Selection of Behaviour

स्किनर को निम्नलिखित सिद्धांतों के लिए जाना जाता है -

① स्किनर का दण्ड का विभाजन $\rightarrow$ स्किनर ने दण्ड के दो प्रकार माने हैं।

(A) सकारात्मक दण्ड $\rightarrow$ (Positive Punishment)
 ऐसा दण्ड जिससे मिलने वाला फायदा खोने की संभावना न हो
 जैसे - जोरी करते फकड़े गये कर्मचारी की सैलरी कटौती न करते हुए
 फटकार लगाकर या निन्दा करके छोड़ दिया।

(B) नकारात्मक दण्ड (Negative Punishment)
 ऐसा दण्ड जिससे मिलने वाला पुरस्कार या फायदा खोने की संभावना
 हो जैसे - जोरी करते फकड़े गये कर्मचारी की सैलरी काट
 लेना।

② स्किनर का प्रशिक्षण का विभाजन $\rightarrow$ स्किनर ने प्रशिक्षण के दो प्रकार माने हैं।

(A) पुरस्कार प्रशिक्षण (Reward Training) :-
 जब किसी अनुक्रिया को सिखाने के लिए पुरस्कार दिया जाये जैसे नई
 को बरखर्चा दवाने की अनुक्रिया सिखाने के लिए भोजन देकर पुरस्कार

(B) दण्ड प्रशिक्षण (Punishment Training) :-
 जब किसी अनुक्रिया को बंद कराने के लिए दण्डित किया जाये तो उसे दण्ड
 प्रशिक्षण कहते हैं जैसे बरखर्चा दवाने की अनुक्रिया को बंद कराने के लिए बिजली का
 झटका देकर खरका में दंडित करना।

स्किनर के अनुसार

③ विलोपन का सिद्धांत (Extinction) (स्किनर व पॉवलोव ने दिया)

पहले जितनी अनुक्रिया के लिए पुरस्कार मिल रहा हो अगर बाद में उसी अनुक्रिया के लिए दण्ड मिलने लगे तो अनुक्रिया का विलोपन हो जाएगा।

जैसे - अगर खरका छानने पर -चूहे को भोजन की जगह बिजली का चटका लगता है तो खरका छानने की अनुक्रिया बंद हो जाएगी। गायब हो जाएगी। विलोपन हो जाएगा।

④ स्किनर का पुनर्बलन का विभाजन → स्किनर ने पुनर्बलन के दो प्रकार बताये**① सकारात्मक पुनर्बलन (Positive Reinforcement)** :-

किसी वांछनीय अनुक्रिया को जारी रखने के लिए बधाई देना सकारात्मक पुनर्बलन है जैसे -चूहे को खरका छानने की अनुक्रिया जारी रखवाने के लिए भोजन देते रहना सकारात्मक पुनर्बलन है।

② नकारात्मक पुनर्बलन (Negative Reinforcement) :-

वह अवांछनीय तत्व हटा देना जिसके होने से वांछनीय अनुक्रिया नहीं हो पा रही है जैसे भूख बचने और भोजन के बीच खरके कुत्ते को हटा देना या चलती सड़क से दंगाएँ को पुलिस डाँट हटाना क्योंकि सड़क यातायात के लिए है दंगा करने की। अइ इकाई करने के लिए नहीं है।

उदा-या -चौर चोरी करने गया बीच में अवांछनीय तत्व (पुलिस)

या - पुलिस अपनी उधुरी पर हँसती रहा अवांछनीय तत्व चौर

⑤ स्किनर की पुनर्बलन की सूची → स्किनर की सूची पुनर्बलन के समय अंतराल को दर्शाती है। जिसमें पुनर्बलन की दो अवधि बतायी गयी है।**① सतत पुनर्बलन (Continuous Reinforcement)** :-

प्रत्येक सफल अनुक्रिया के बाद पुनर्बलन देना सतत पुनर्बलन कहलाता है जैसे -चूहे को प्रत्येक बार खरका छानने पर भोजन देना

② आंशिक पुनर्बलन (Partial Reinforcement) :-

जब कुछ सफल अनुक्रियाओं पर ही सुदृढ़ किया जाये तो उसे आंशिक पुनर्बलन कहा जाएगा। जैसे - पहली, इसी, और तीसरी बार क्रमशः 514 वी, 3213 वी एवं 12417 वी सफल अनुक्रिया पर भोजन देना।

Note

आंशिक पुनर्बलन सतत पुनर्बलन से ज्यादा प्रभावशाली होता है।

(A) निश्चित अंतःपात पुनर्बलन (fixed internal reinforcement)
 (B) परिवर्त्य अंतःपात पुनर्बलन (variable " "
 (C) निश्चित अनुपात पुनर्बलन (fixed ratio " "
 (D) परिवर्त्य अनुपात पुनर्बलन (variable ratio " ")

(B) 5-1-64-Goo-3-14

(c) $(5:1) \rightarrow (10:2) \rightarrow (15:3)$

(D) $(16:1) \rightarrow (2:3) \rightarrow (17:12) \rightarrow (5:7)$

इस विज्ञान के अनुसार अगर कुछ सहायक अनुक्रियाएं मुख्य अनुक्रिया के साथ एक क्रम में सीख ली जाएं, तो शब्दों का अधिकतम अर्थ प्राप्त हो सकेगा।
जैसे - नुई का गोलकार पगह से बाहर आया (R.)

उपरोक्त चाल के ज्ञाना (R_2)

माँ अतः: एवम् एवम् (R₃)

चिकित्सा ने यह सिद्धांत सिद्ध करने में सफल हो गई कि प्रकृति स्वयं ही रोग को दूर करने का प्रयास करती है। इसलिए चिकित्सा का उद्देश्य रोग को दूर करना नहीं, बल्कि प्रकृति की शक्ति को बढ़ावा देना है।

- ① चोर्ट - 2 चण्डरी में विभाजन का सिद्धान्त
- ② सक्रिय भागीदारी का सिद्धान्त
- ③ अपनी गति से सीखने का सिद्धान्त
- ④ स्वपरीक्षण का सिद्धान्त
- ⑤ वृत्त प्रतिफल का सिद्धान्त

Ques - Online Test

8) स्किनर का भाषा विकास का सिद्धांत → स्किनर के इस सिद्धांत की भाषा का " वातावरणीय / किया प्रयत्न / अनुकरण एवं सबनीकरण " का सिद्धांत कहते हैं।

इस सिद्धांत के तीन चरण हैं जो निम्न हैं —

- (A) अनुकरण (Imitation) — गिलास लामो चुनकर गिलास रख पाना
- (B) सादृश्य (Association) गिलास रख और वस्तु को पीटना
- (C) सबनीकरण (Reinforcement) माता पिता सिर्फ सही सादृश्य को बराबर देंगे

9) स्किनर का अधिगम का सिद्धांत → इस सिद्धांत की सुविधा की दृष्टि से निम्न लिखित भागों में बाँटे जा सकते हैं।

(A) सिद्धांत का सारांश → कोई भी अधिगमी किसी अनुक्रिया को तभी जारी रखेगा जब उस अनुक्रिया के होने से उसे प्यापदा या पुरस्कार मिलता है। अर्थात् किसी भी अनुक्रिया (R) का जारी रखना या बन्द होना अनुक्रिया से मिलने वाले प्यापदे या नुकसान पर निर्भर करता है।

(B) सिद्धांत के नाम →

- (1) अनुक्रिया अनुबन्धन (R-Type Conditioning) अनुक्रिया करने पर मिलता है।
- (2) किया प्रयत्न अनुबन्धन (Emitted Response) प्रयत्न अनुक्रिया करने से मिलता है।
- (3) सक्रिय अनुबन्धन सि० (Operant Conditioning) प्रयत्न अनुक्रिया करने पर मिलता है।
- (4) अनुक्रिया-उद्दीपक सिद्धांत (Reinforced Response theory) — बूढ़े को भोजन प्यापदा उद्दीपक से नहीं अनुक्रिया से है।

(5) सबनीकृत अनुक्रिया सिद्धांत — बूढ़ा खरका को देखने की वजाय खरका को खोलने (अनुक्रिया) की साधत अलेगा क्योंकि खोलने पर उसे प्यापदा (भोजन) मिलेगा।

(6) मैमिटिक यौविक साधनात्मक अनुबन्धन (प्यापदा के लिए अनुक्रिया)

अ प्राचीन अनुबन्धन सिद्धांत (Ancient conditioning)

कबूता का उदाहरण $\leftarrow$ लाल प्रकाश (X) $\leftarrow$ हरा प्रकाश (खरका) अनुक्रिया
 बूढ़े का उदाहरण (खरका) $\leftarrow$ देबरा (X) $\leftarrow$ देबना (भोजन) अनुक्रिया

अनुक्रिया पर जोर = स्विच

(C) प्रमुख बिंदु →

1. कबूतर वाले बक्से को कबूतर पेकिंग (Pigeon-Box) कहते हैं।
2. चूहे वाले बक्से को छुफआत में "सक्रिय अनुकूलन बक्सा" और बाद में "स्किनर का बक्सा" कहा गया।
3. इन दोनों बक्सों के समिकाक स्किनर ही थे (स्किनर ने ही कहा था)।

* इवान पेद्रोविच पावलोव →

(1) पावलोव परिचय →

(A) निवासी - रूस

(B) पेशा - शरीर विज्ञानी

(C) प्रयोग - कुत्ते पर

(D) सिद्धांत - शास्त्रीय अनुबंधन

(E) अध्ययन - प्राणी की लाट व्रश्चि का पाचन

(F) पुरस्कार - (1904 का नोबेल पुरस्कार)

(G) पुस्तक - (Conditioned Reflex)

* प्रमुख बिंदु →

1. प्रयोग के कुत्ते को कुछ दिन भूखा रखकर एक मैप से कस कर बाँधा गया था।
2. कुत्ते की लाट व्रश्चि को सफरी डाय एक मली से जोड़कर बीकट में जोड़ा तबकि लाट बीकट में रुक रही थी।

* प्रयोग का सारांश →

अगर किस **NS** को लगातार किसी **UCS** से पहले प्रस्तुत किया जाये तो कुछ समय बाद **NS** पर भी वही अनुक्रिया होगी जो **UCS** पर होती थी अर्थात् **NS**, **CS** में बदल जायेगा और **UCR**, **CR** में बदल जायेगी

(1) **NS** - (Neutral Stimulus) तटस्थ निष्क्रिय उत्तरीपक

(2) **UCS** - (Unconditioned Stimulus) स्वाभाविक गैर अनुकूलित उत्तरीपक

(3) **UCR** - (Unconditioned Response) स्वाभाविक गैर अनुकूलित अनुक्रिया

(4) **CS** - (Conditioned Stimulus) अनुकूलित कृत्रिम उत्तरीपक

(5) **CR** - (Conditioned Response) अनुकूलित कृत्रिम अनुक्रिया

* प्रयोग के चार चरण →

(1) भौषण = लाट टपकना
UCS = **UCR**

2. $\frac{\text{घंटी की आवाज}}{NS} = \frac{\text{चौकना होना}}{UCR}$

3. $\frac{\text{घंटी की आवाज}}{NC = CS} = \frac{\text{भौपन}}{UCS} = \frac{\text{लाट टपकना}}{UCR = CR}$

4. $\frac{\text{घंटी की आवाज}}{CS} = \frac{\text{लाट टपकना}}{CR}$

- (1) उत्प्रेषक सामान्यीकरण (Stimulus Generalization)
 एक जैसे उत्प्रेषकों पर एक जैसे अनुक्रिया होगी अर्थात् घंटी जगट धमकानियम या गिटार बजाने पर भी कुत्ता लाट टपकायेगा।
- (2) उत्प्रेषक विवेक्षण (Stimulus Discrimination)
 जो न तो CS होगा और न ही UCS होगा कुत्ता उस पर लाट टपकायेगा क्योंकि वह UCS या CS न होकर NS रहेगा।
- (3) विलोपन (Extinction) लगातार घंटी बजाने और भौपन न होने से लाट टपकने की अनुक्रिया बंद हो जायेगी।
- (4) आदर्श अन्तराल (Ideal Interval)
 NS को CS बनाना तभी संभव है जब NS और UCS भौपन के बीच कम से कम अन्तराल हो अर्थात् घंटी और भौपन के बीच अधिकतम अंतर 0.5 से 5 सेकंड तक होना चाहिए।
- (5) स्वतः पुनर्लाभ (Spontaneous Recovery)
 अगर घंटी की आवाज (CS) को बंद कर वापस लेंगे भौपन UCS को लगा पाये तो लाट टपकने की अनुक्रिया भौपन पर अपने आप स्वतः होगी इसे डूबाए नहीं लीखना पड़ेगा।
- (6) निम्न श्रेणी अनुकुलन (Lower Class conditioning)
 UCS भौपन का सहाय लेकर घंटी या (CS) पर लाट टपकना आसानी से होने के कारण यह निम्न श्रेणी अनुकुलन है क्योंकि भौपन का जाल-बन्धन प्रकाश पर लाट टपकना होगा।
- (7) उच्च श्रेणी अनुकुलन (Higher Class —)
 एक CS को घंटी की सहायता लेकर इसे नये CS (दार्च) पर लाट टपका देना उच्च श्रेणी अनुकुलन है जैसे घंटी की आवाज का सहाय लेकर दार्च प्रकाश पर लाट टपकना होगा।

* सिद्धांत के विभिन्न नाम

- (1) शास्त्रीय अनुबंधन Classical Conditioning
- (2) S-Type उद्दीपक अनुबंधन सिद्धांत (उद्दीपक पर जोर अर्थात् चंदीबपस)
- (3) अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत
- (4) संबद्ध अनुक्रिया सिद्धांत
- (5) प्रतिवादी प्रतिक्रिया सिद्धांत
- (6) अनुकूलित प्रत्यावर्तन

* अल्बर्ट बैन्डुरा

- (1) कनाडा के मूल निवासी अल्बर्ट बैन्डुरा को उनके "सामाजिक अधिगम सिद्धांत" के लिए जाना जाता है।
- (2) बैन्डुरा बिना सामाजिक अधिगम का सिद्धांत अधिगम का सर्वश्रेष्ठ सिद्धांत माना गया है। उन्हें "आधुनिक संतानात्मक आन्दोलन का जनक भी माना जाता है।
- (3) बैन्डुरा ने अपने अधिगम के सिद्धांत हेतु अपना प्रसिद्ध "बॉबी गुडिया" (Bobo Doll Experiment) किया जिसमें बालकों के तीन समूह शामिल थे।
- (4) बैन्डुरा का सिद्धांत अधिगम का सर्वश्रेष्ठ सि० है क्योंकि इसकी निम्नलिखित बातें अत्यन्त ही खास हैं।

(i) न सीखना भी सीखना है

- (ii) दृष्ट एवम्-पुनराकार का अधिगम पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा है।
- (iii) पकरी नहीं है कि अधिगम ही ही यह संप्रत्यक्ष भी हो सकता है।
- (iv) सीखने बाद भी सबकुछ में परिवर्तन हो ऐसा नहीं है।

(5) बैन्डुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के निम्न लिखित नाम हैं।

(1) अप्रत्यक्ष अधिगम का सि० (Indirect Learning)

बच्चे ने बॉबी गुडिया को TV पर देखा एक बच्चा ने उसकी-चोर-पट्टा फटने फिर ऐसा ही उस बच्चे level में किया उस गुडिया के साथ यह है अप्रत्यक्ष अधिगम।

(2) अनुकरण अधिगम (Imitation Learning)

TV पर देखकर बॉबी गुडिया के साथ बच्चे (तीन बच्चे) का समूह-2 बच्चा एक ने-चोर-पट्टा उतारे ने, पट्टा टूटा, तीसरे ने गुडिया को देखा वह नहीं।

(3) अवलोकन / प्रेक्षणमय / निरीक्षणमय अधिगम (Observation Learning)

TV पर देखकर सीखना / नकल मारना

(4) अच्छा आदर्श आधारित अधिगम / निरूपित / प्रतिरूपित (Modelling)

TV पर देखकर TV को आदर्श मानना अर्थात् जिससे सीखें उसी को आदर्श मानें।

(5) सामाजिक अधिगम (Social Learning)

जो अधिगम समाज में हुए हैं वही सीखना आदर्श कोई भी आदर्श नहीं सीखना।

* अल्बर्ट बन्दुरा ने अधिगम के चार चरण माने हैं —

- (1) अवधान (Attention)
- (2) धारण (Retention)
- (3) पुनर्उत्पादन (Reproduction)
- (4) प्रेरक (Motivation)

* Books - (1) The social Learning
(2) The Principles of Behaviour Modification
(3) Psychological Modelling

Note अधिगम स्थानान्तरण का सिद्धांत (पाँच) लोग —

- (1) थार्नडाइक — (समान तत्वों का सिद्धांत)
- (2) चार्ल्स (छुड) — सामान्यीकरण का सिद्धांत
- (3) स्पीयरमैन — (CA-कारक का सिद्धांत)
- (4) विलियम सी. बागले — (मुख्यी का सिद्धांत)
- (5) कौटलर — (आरापण का सिद्धांत)

* चार्ल्स जुड -:

जुड ने अधिगम स्थानांतरण का सामान्यीकरण का सिद्धांत दिया है।
 जिसका अर्थ है कि पहले और बाद के अधिगम में सिर्फ उन्ही तत्वों का
 स्थानांतरण होगा जो दोनों तर्क मौजूद हों या जो अभ्यर्थी ही जैसे
 दो अलग-2 प्रश्न जो एक ही जोर्मुले पर आधारित है। इसमें प्रश्नों का
 आपस में कोई स्थानांतरण नहीं होगा बल्कि स्थानांतरण ही सूत्र का ही
 होगा जो कि दोनों प्रश्नों में मौजूद है या अभ्यर्थी है।

जैसे- $50 - (CP) = 80 - (SP) \Rightarrow लाभ = 30$

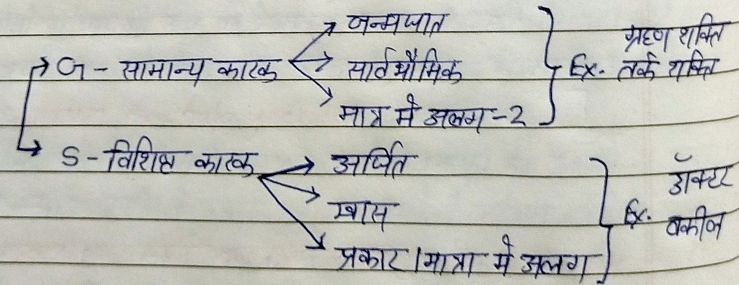
$1000 - (CP) = 1500 - (SP) \Rightarrow लाभ = 500$

सूत्र एक ही है।

अर्थात् सूत्र का स्थानांतरण
 हुआ है। यवात का
 नहीं क्योंकि यवात
 अलग-2 है।

* चार्ल्स स्पीयरमैन -:

ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक स्पीयरमैन ने अधिगम के स्थानांतरण का G-कारक
 का सिद्धांत दिया है।
 जो निम्न लिखित है। —



ग्रहण शक्ति
 Ex. तर्क शक्ति

डॉक्टर
 Ex. कमील

Note

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो गया है कि S-कारक हमारे सभी कार्यों
 में सहायक नहीं है इस लिए इसका स्थानांतरण नहीं होगा क्योंकि हमारे प्रत्येक
 कार्य में G-कारक सहायक होगा इस लिए स्थानांतरण G-कारक का ही
 होगा।

* बिलियम सी० बागले -^०

बागले ने अधिगम स्थानांतरण में मूल्यों के स्थानांतरण का सिद्धांत दिया है। इस सिद्धांत के अनुसार अगर दो अलग-2 परिस्थितियों में एक ही मूल्य का प्रदर्शन किया गया है तो स्थानांतरण परिस्थितियों का आपस में नहीं होगा अपितु उस मूल्य का ही होगा क्योंकि दोनों परिस्थितियों में समान रूप से मौजूद है।

उदा: अगर एक व्यक्ति किसी का खोया हुआ पर्स पाकर उसे लौटा देता है और इसी बार वही व्यक्ति किसी व्यक्ति का खोया हुआ मोबाइल पाकर वापस लौटा देता है तो पर्स लौटना और खोया हुआ मोबाइल लौटना दो मूल्य-2 परिस्थितियाँ हैं किन्तु आपस में कोई स्थानांतरण नहीं होगा बल्कि स्थानांतरण तो उस श्रमकारी के मूल्य का होगा जो दोनों ही वस्तुओं को वापस करके दिखाया गया है।

* हर्मन एबिंग हाउस (हर्मनी) -^०

- (1) अधिगम मनोविज्ञान के जनक जिन्होंने (हर्मन) दुनिया में पहली बार अधिगम की प्रक्रिया का अध्ययन किया।
- (2) इन्होंने सीखने की सामग्री के रूप में निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया।
जैसे - चालाक-चालाक अतः चालाक शब्द अर्थपूर्ण है लेकिन बलाक नहीं 101-100
- (3) दुनिया में पहली बार स्मृति-विस्मृति (याद करना-भूल जाना) का अध्ययन करने का श्रेय हर्मन एबिंग हाउस को ही जाता है।
- (4) हर्मन ने विस्मृति का निष्क्रिय विस्मृति। अनाभ्यास का सिद्धांत भी दिया है।
- (5) मनोविज्ञान में वह खूब पढ़ाई की अवधारणा भी पहली बार एबिंग हाउस ने ही प्रयोग किया।
- (6) मनोविज्ञान का अतीत (Past) बहुत लम्बा है लेकिन इतिहास बहुत कम है।

* डेविड आसुबेल :-

- (1) आसुबेल को अधिगम की संज्ञानवादी विचार धारा का समर्थक माना गया है।
- (2) आसुबेल ने अधिगम का सांकेतिक अधिगम सिद्धांत (Meaningful Learning) दिया है जिसका अर्थ है लोग वही सीखते हैं जो उनके जीवन में उपयोगी Usefull होता है।
- (3) आसुबेल ने अधिगम के 4 प्रकार भी बताये हैं
 - (i) रटत (Rote) जो रटा जाता है या रटके सीखते हैं।
 - (ii) अभिग्रहण (Receptive) जो दूसरों से सीखते हैं जैसे - नमस्ते, साधारण, स्मरण
 - (iii) सांकेतिक अधिगम (Meaningful) हम वही सीखते हैं जो अपने काम होता है।
 - (iv) अन्वेषण अधिगम (Discovery) जो प्रयोगशाला में प्रयोग करके सीखते जैसे विज्ञान, PH-मान आदि अर्थात् जो च पढ़ाए करके सीखना
- Note आसुबेल के चारों अधिगम के प्रकार में "समस्या समाधान" का अर्थ प्रकाश माना गया है (अन्वेषण अधिगम)
- क्योंकि इसमें जो च पढ़ाए करके सीखा जाता है और जो च पढ़ाए नहीं की जाती है तब समस्या होती है।
- (4) आसुबेल ने शिक्षण का सक्रिय संज्ञानात्मक प्रतिमान भी दिया है, यह शैक्षिक अधिगम पर आधारित है।
- (5) आसुबेल के सिद्धांत को शिक्षण शिक्षण प्रतिमानों के कुल प्रक्रमण सिद्धांत Information processing theory के अन्तर्गत रखा गया है।
- (6) आसुबेल ने अपने सिद्धांत पर अपनी प्रविष्टि पुस्तक लिखी है।
 ["Education Psychology A Cognitive View"]

* कार्ल रॉजर्स :-

- (1) अमेरिकन मनोवैज्ञानिक कार्ल रॉजर्स को "अनुभववादी अधिगम का जनक" माना जाता है जिसका अर्थ है कि अधिगम अनुभव का परिणाम होता है।
- (2) रॉजर्स को मैस्लो के साध मानवतावाद का जनक माना जाता है।
- (3) रॉजर्स आधुनिक मानवतावादी परामर्श चिकित्सा। ग्राहक आधारित परामर्श चिकित्सा का भी जनक माना जाता है।
- (4) रॉजर्स ने शिक्षण का दिया विद्यमान प्रतिमान भी दिया है, जिसका अर्थ है कि शिक्षक को छात्र की समस्याओं को समझने में सहायता देने की जरूरत नहीं छात्र खुद सही दिशा पाने में सक्षम है।

(5) रौजर्स ने अस्तित्व का स्व (self) सिद्ध भी दिया है जिसमें अस्तित्व की वास्तविक स्व (real self) तथा आदर्श स्व (Ideal self) के बीच का संतुलन माना गया है।

(6) (Client centred therapy) — book — रौजर्स
 ↳ (ग्राहक आधारित चिकित्सा में परामर्श)

* सिमॉर पैपर्ट :-

पियार्ने के शिष्य पैपर्ट की निर्माणात्मक अधिगम / संरचनावादी अधिगम / रचनात्मक अधिगम का जन्म माना जाता है। जिसका अर्थ है कि ज्ञान को दिया और प्राप्त किया नहीं जा सकता है अपितु ज्ञान की रचना की जा सकती है।

* डोलाई एवं मिलर :-

(1) अल्बर्ट बैन्डुरा के शिष्य डोलाई एवं मिलर ने सामाजिक अधिगम एवं अनुकरण का सिद्धांत दिया है।

(2) इन दोनों ने अपने इस सिद्धांत को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक — Social Learning & Imitation (सामाजिक अधिगम एवं अनुकरण) में प्रकाशित किया है।

(3) इन दोनों ने मुख्यतः अपने सिद्धांत में अनुकरण पर जोर दिया है तथा इन्होंने तीन प्रकार के अनुकरण बताये हैं।

(A) समान अनुकरण (Similex Imitation)

इस प्रकार के अनुकरण में अनुकरण वही तक संभव होता है जहाँ तक समानता पायी जाती है।

जैसे- राम पहले जागरा फिर वह उसे दिल्ली जानी की साँचा लेकिन जागरा पाकर वापस लौट आया दिल्ली नहीं गया लेकिन इसी बार जागरा से दिल्ली गया तो यद्यपि समानता जागरा तक है इसी बार उसे रास्ता जागरा से दिल्ली का प्रश्न पड़ा

(B) सम्मिलित अनुकरण (Assimilated Imitation)

इस प्रकार के अनुकरण में अनुकरण का प्यारी रहना या लफ्फ देना अनुकरण से मिलने वाले हँस या हल्लाकार पर निर्भर करता है।

जैसे - पछली बार चार आर्ये अरिषि को नमस्ते करने से मिली प्रणाम के कारण एक छोटे बालक का आगे से सभी अरिषियों को नमस्ते करना

(C) प्रतिबिम्बित अनुकरण (Exagger Imitation)

जब अनुकरण करते समय हँस-हँस अनुकरण कर लिया पार्ये तथा रत्ती - भर भी परिवर्तन न किया पार्ये -

जैसे - शिशु डाप सही उच्चारण बताये जाने पर काफ़ी डाप हँस-हँस

* बुल्फ गैंग कीदलर :-

1. 1912 के आस-पास जर्मनी से मनोविज्ञान के गैस्टाल्टवादी संप्रदाय का जन्म हुआ
2. गैस्टाल्ट शब्द जर्मनी भाषा का है जिसका का अर्थ है सम्पूर्ण विषय या आकृति अर्थात् किसी भी समस्या को तभी हल किया जा सकता जब सम्पूर्ण समस्या हमारी आँखों के सामने हो।
3. इसी लिए गैस्टाल्टवाद को द्विती में सम्पूर्णवाद। पूर्णगिवाद। पूर्णोपवाद। अवयवीवाद आदि नामों से जाना जाता है।
4. इयलिस विज्ञान युग पूर्ण से अंश"मी और को गैस्टाल्टवाद की संज्ञा माना जाता है।
5. गैस्टाल्टवाद के जनक "मैक्स वर्त्थीमर" माने जाते हैं।

कीदलर का परिचय ->

1. कीदलर एक कम्पनी के लिए प्रथम विश्व युद्ध के विनाशकारी प्रभाव का अध्ययन करने पर काम करते थे।
2. कीदलर ने अपना यह अध्ययन (टेनरिफ) द्वीप के केनारी शहर में किया।
3. कीदलर के प्रयोग में कई वनमानुष शामिल थे लेकिन सभी प्रयोग प्रयोगशाला पर किये गये।
4. प्रयोग पर कुल तीन प्रयोग किये गये जिसमें दो प्रयोग बच्चे बालों और एक प्रयोग दूड़ी बाला था।

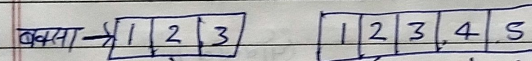
कौटलर का सुस का सिद्धांत →

1. सुस का युरेका (Eureka), बिंगो (Bingo), अथ अनुभव (Aha Experience) अतः इंसि (Insight) आदि नामों से भी जानाते हैं।
2. कौटलर के अनुसार अधिगम एक संतानात्मक प्रक्रिया है जो सम्पूर्ण चरित्र या सम्पूर्ण समस्या के त्रात्यसिद्ध पुनर्गठन पर निर्भर।
3. सुस का सर्व समस्या समाधान के दौरान उपलब्ध सभी विकल्पों पर चिंतन करते हुए अचानक ही सही विकल्प का चयन करके लक्ष्य एवं माध्यम के बीच अर्पण संबंध जोड़कर समस्या हल कर लेता है जैसे - अचानक बक्सा का माध्यम बनाकर केले (लक्ष्य) की प्राप्ति करना है।
4. अतः अधिगम चिंतन पर आधारित है मुद्दे एवं प्रणाम जैसे कुछ भी नहीं है।

* कौटलर का अधिगम स्थानान्तरण का आरोपण का सिद्धांत →

पहले और बाद के अधिगम में ज्यों तक समानता पायी जाएगी स्थानान्तरण या आरोपण वही तक होगा।

जैसे पहली बार दूसरी बार



समानता (स्थानान्तरण होगा)

{ स्थानान्तरण नहीं होगा
नये तरीके से सीखना होगा }

Books → कौटलर

- (1) The Mentality of Apes
- (2) The Task of Gestalt (चिन्मैत्री का प्रयोग)

* राबर्ट मिलर गैने :-

- (1) जर्मैरिकन मनोवैज्ञानिक गैने को "शृंखला बद्ध अधिगम" के लिए जाना जाता है जिसे श्रैणी बद्ध अधिगम / अधिगम साँपानकी (Hierarchy of Learning) है। (1)
- (2) इस सिद्धांत में कुल 8 चरण हैं जो सरल से कठिन की ओर जाते हैं। (2)
- (3) इसके पहले तीन चरण क्रमशः पॉवरलॉव (कुत्ता), थॉर्नडाइक (बिल्ली), तथा रिक्कर (चूहा) से लिया गया है इसी वजह से इन तीन चरणों से पशु पक्षी भी सीख सकते हैं। (3)
- (4) इसके निम्नतम स्तर पर संकेत अधिगम (पहला चरण) और उच्चतम स्तर पर समस्या समाधान अधिगम (सबसे ऊपर का चरण) सीखा जाता है।
- (5) क्योंकि यह शृंखला बद्ध अधिगम है इस लिये इसमें बीच से बीच प्रवेश नहीं किया जा सकता है।
- (6) गैने ने अपनी सिद्धांत पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तकें भी लिखी हैं।

गैने - books ->

- (1) The Conditions of Learning
- (2) The Instructional Design

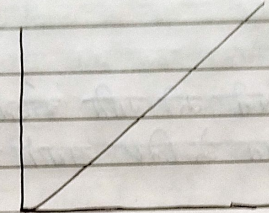
(7) गैने द्वारा 8 चरण वर्गीकृत गये निम्न लिखित हैं।

- | | | |
|------------------------|---|---|
| पशु पक्षी की सीखने में | { | (1) संकेत अधिगम (Sign Learning) -> (पॉवरलॉव) |
| | | (2) उत्प्रेरक-सक्रियता अधिगम (S-R) (थॉर्नडाइक) |
| | | (3) शृंखला अधिगम (Chain Learning) (रिक्कर) |
| मानव पर अधिगम | { | (4) शब्द-सादृश्य अधिगम (Word Association) / आम - नीबू, रसी - चाल (अर्थ) |
| | | (5) विभेदन अधिगम (Discrimination - L) |
| | | (6) सम्प्राप्य " (Concept - L) |
| | | (7) सिद्धांत " (Rule - L) |
| | | (8) समस्या समाधान " (Problem Solving - L) |

* अधिगम के वक्र :-

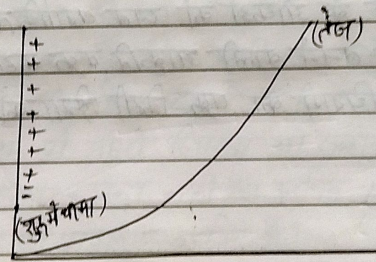
- (1) अधिगम का वक्र अधिगम में होने वाले उतार-चढ़ाव को दिखाता है।
- (2) अधिगम के वक्र के प्रकार —
- (3) अधिगम के वक्र के मुख्यतः 4 प्रकार माने गये हैं।

① सरल वक्र (Simple / Linear / Curve of Learning) →



सरल वक्र में सीखने की गति हमेशा एक जैसी होती है इसलिए मानव के लिए सरल वक्र बनाना असंभव है।

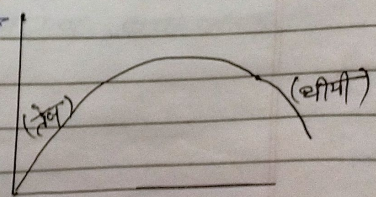
② नतीर / उत्तल / धनात्मक वक्र। बढ़ते निष्पादन का वक्र →



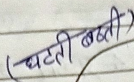
इस वक्र में शुरुआत में सीखने की गति धीमी और बाद में तेज होती है।
 जैसे - परीक्षा के पहले सीखने की गति धीमी और परीक्षा के दौरान सीखने की गति तेज (बढ़ता तेज)।

③ उन्नतीर / अवतल / ऋणात्मक। घटते निष्पादन का वक्र →

इस प्रकार के वक्र में शुरुआती सीखने की गति तेज और बाद में धीमी होती है।
 जैसे - परीक्षा के दौरान सीखने की गति तेज और बाद में धीमी हो जाती है।



④ मिश्रित वक्र / स्पन्दित वक्र / S-आकृति वक्र →



इस प्रकार के वक्र में सीढ़नी की गति चटती बढ़ती (असमान) रहती है अर्थात् इस मानव के लिए सबसे संभव वक्र है।

* वक्र की परिभाषाएं →

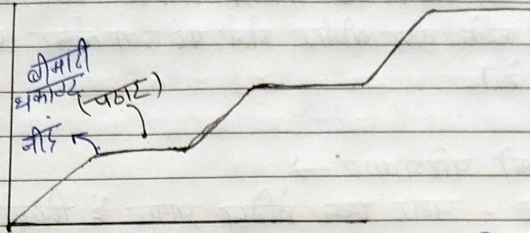
① रिक्तर - अद्योगम का वक्र अद्योगम में दर्शाता है।
अवनति का ग्राफ पैपर पर वर्णित है।

अवनति का ग्राफ पैर पर वर्णन है।
 (e) मोड़ - अधिगम के वक्र अधिगम की गति पर प्रगति के सूचक हैं।

घ) सर्वेक्षण - सीढ़ी के आँकड़ों को जब वर्गीकृत पैपर पर दिखाया जाता है तो उससे बनने वाली आकृति वक्र कहलाती है।

④ रेमर्स क्वॉं गैप - अदिगम का एक किसी क्रिया की आधिक्य रूप से सीखने की प्रकृति है।

* [अधिगम का पट्टा]



अधिगम की वह अवधि जब अधिगमी थकावट, निद्रा, आदि रुकावट के कारण अपने सीखने की प्रक्रिया को कुछ समय के लिए स्थगित कर देता है तो ऐसे उसके अधिगम का वक्र ऊपर या नीचे न जाकर एक सीधी रेखा में बदल जाता है इसे ही अधिगम का पट्टा कहते हैं।

* पट्टा की विशेषताएं -

- (1) पट्टा एक सार्वभौमिक एवं अधिगम की सामान्य प्रक्रिया है।
- (2) पट्टा बनने से रोक नहीं जा सकता है।
- (3) पट्टा बनना कोई कमी नहीं है बल्कि यह अधिगम का एक गुण है।
- (4) कोई भी पट्टा छात्रों के लिए नहीं बनता है।
- (5) उचित प्रयास किसी भी पट्टा को दूर किया जा सकता है।
- (6) पट्टा अधिगम में आयी स्थिरता या रुकावट का संकेत है।
- (7) पट्टा कोई अलग रचना नहीं है। उपरि यह अधिगम के वक्र का ही हिस्सा है।
- (8) पट्टा अधिगम का अवयव नहीं है।

* पट्टा बनने के कारण -

पट्टा बनने के कई कारण हो सकते हैं जैसे - निद्रा, थकावट, बीमादी, दुर्घटना, रुचि, अभ्यास की कमी, प्रेरणा, विश्वास, की कमी, तपस्या का अभाव, प्रेरणा से छुड़ पाना, गलत शिक्षण विधि, नीचा या, कठिन, या अनुपयुक्त पाठ्य-क्रम लक्ष्य-परिवर्तन, आलस्य का अभाव अधिगम का स्थानांतरण नकारात्मक स्थानांतरण, बाधा या, रुकावट, दुर्घटना, प्रभाव आदि,

पड़ा इर करने के उपाय →

जैसे - नींद आने पर थोड़ी देर सोकर और थकावट सोने पर थोड़ी देर आराम करके तथा बीमार होने पर दवा लेकर पड़ा को इर किया जा सकता है।

पड़ा की परिभाषा →

- ① **स्किनट** - पड़ा एक घैरेप प्रकार है जिससे सोवने की क्रिया में उन्नति का प्रयत्न नहीं होता है।
- ② **रॉव** - पड़ा सोवने की क्रिया की एक प्रमुख विशेषता जो उस अवधि को सुचित करती है जिसमें सोवने की क्रिया में कोई उन्नति नहीं होती है।
- ③ **सोरेन्सन** - पड़ा कुछ दिनों, कुछ हफ्तों, कुछ महीनों के लिए बन सकता है।
- ④ **रेक्स एव नोट** - अधिग्रहण का पड़ा तब बनता है जब व्यक्ति सोवने की क्रिया एक अवस्था में पहुँचकर वहीं से इसी अवस्था में प्रवेश करता है जैसे - लालक - छिरी में सध्याए एक पाकर सध्याए से पा पाकर उसका प्रण ध्यान सध्याए से पा से जायगा और सध्याए एक पर चला बन जायगा।

STET-ASPIRANT-SATYAM

you Tube - channel -

All Notes STET, UPTET, CTET

Jain - Telegamyam ✓

